₹१००/- वार्षिक

दिव्य जीवन

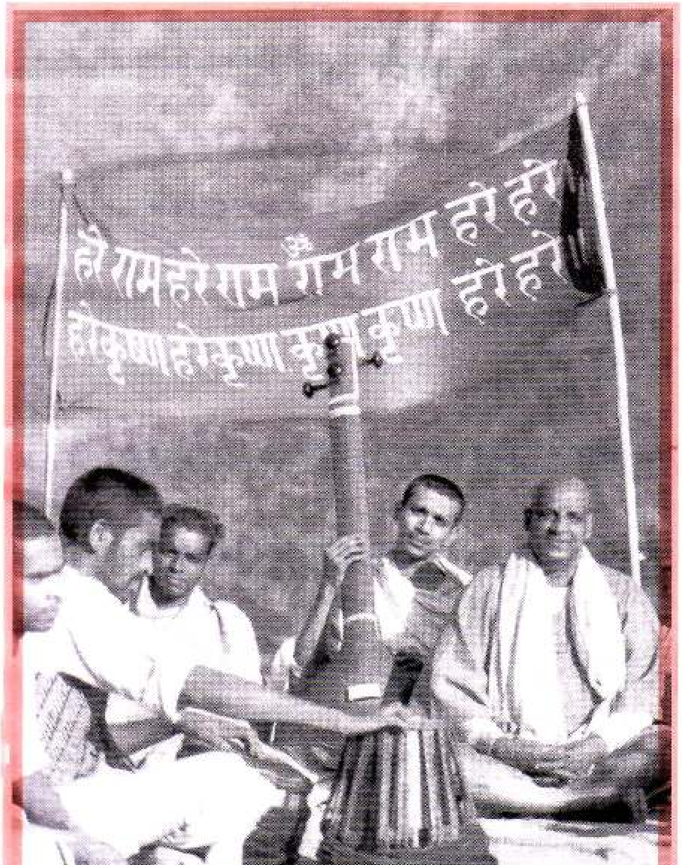

ईश्वर-नाम के केवल स्मरण मात्र से ही हमारे अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ।।

इस कलियुग में केवल हरि का नाम ही सार है। मोक्ष की प्राप्ति का और कोई साधन इस कलि-काल में नहीं है। केवल एक ही विधि है और एक ही उपाय है।

बड़े-से-बड़े पापी के पापों का नाश ईश्वर-नाम-स्मरण से हो जाता है।

—स्वामी शिवानन्द

नवम्बर २०१८

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

—स्वामी शिवानन्द

हरि-नाम

"**राम न सकहिं नामगुण गाई।**" यहाँ तक कि राम अर्थात् ईश्वर भी नाम की महिमा का ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकते, फिर भला मनुष्य की तो बात ही क्या है! इस कलियुग में तो ईश्वर के नाम के जप की और भी अधिक आवश्यकता है; क्योंकि "**कलियुग केवल नाम अधारा**"—इस कराल कलि-काल में केवल ईश्वर के नाम का ही एक सहारा है। नाम-जप के अतिरिक्त अनन्त आनन्द और शान्ति को देने वाला कोई भी सुगम और सरल उपाय नहीं है।

—स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन

Vol. XXIX	नवम्बर २०१८	No. 8

उपनिषद्–सुधा बिन्दु

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः। तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते। तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन। एतद्वै तत् ।।

(कठोपनिषद् : २/३/१)

जिसका मूल ऊपर की ओर तथा शाखाएँ नीचे की ओर हैं, ऐसा यह अश्वत्थ वृक्ष सनातन है। वही शुद्ध है, वही ब्रह्म है, उसे ही अमृत कहा जाता है। समस्त लोक उस पर ही आश्रित हैं, उससे परे कुछ नहीं है। यही निश्चय वह (ब्रह्म) है।

पूर्व–अंक से आगे :

शिवानन्दस्तोत्ररत्नमाला

सद्गुरुनवमणिमाला

(ज्ञानभास्कर महामहोपाध्याय श्री एस. गोपाल शास्त्री)

विद्यापारदृशं विवेचकदृशं विज्ञानपाथोनिधिं
विद्यादानविचक्षणं विविधशास्त्रेषु प्रसन्नेक्षणम्।
विज्ञाभिष्टुतवैभवं विमलधीविज्ञाततत्त्वार्थकं
विश्वख्यातयशस्ततिं परशिवानन्दं भजे सद्गुरुम्।।७।।

७. मैं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की आराधना करता हूँ जो विवेक के निर्झर हैं, ज्ञान के सागर हैं, सर्वशास्त्रनिष्णात हैं, विद्वज्जनों द्वारा वन्दित हैं, जिन्होंने अपनी विमल मति द्वारा तत्त्वज्ञान प्राप्त किया है तथा जिनका यश सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित है।

वेदान्तागमयोगभक्तितपसामेकान्तसद्मायितो
नादब्रह्मविलीनशुद्धहृदयः सर्वे समं भावयन्।
लोकानुग्रहतत्परश्च वयसां द्वासप्ततिं तीर्णवान्
पूर्णारोग्यशताभिषेकमहभाग् भायात्सुखं सद्गुरुः।।८।।

८. जो सकल शास्त्र, योग, वेदान्त, भक्ति एवं तपस्या के धाम हैं, जिनका पावन हृदय परब्रह्म में नित्य लीन है, जो समदृष्टिसम्पन्न हैं तथा जिनकी एकमात्र आकांक्षा लोककल्याण है, ऐसे हमारे सद्गुरु महाराज ने बहत्तरवें वर्ष में प्रवेश किया है। भगवद्–चरणों में यही प्रार्थना है कि वे सदैव सुस्वस्थ एवं सुप्रसन्न रहें तथा उनके भक्तवृन्द द्वारा उनका शताभिषेक सम्पन्न हो।

(क्रमशः)

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज के बहत्तरवें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में रचित

दीपावली सन्देश

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

दीपावली दीपोत्सव है। यह सम्पूर्ण भारत में अत्यन्त भव्य रूप में मनाया जाता है। यह हिन्दुओं के लिए अत्यधिक उल्लास एवं पावन आराधना का समय है, यह उत्सव दो दिन तक मनाया जाता है। दीपावली का उत्सव हिन्दू व्यावसायिक वर्ष के प्रारम्भ में देवी लक्ष्मी की आराधना-उपासना स्वरूप मनाया जाता है।

यह उस शुभ दिवस का सूचक है जब भगवान् श्री राम रावण को पराजित करके अयोध्या लौटे थे। इसी दिन भगवान् श्री कृष्ण ने नरकासुर का वध किया था।

दक्षिण भारत में इस दिन प्रात:काल सभी तैल-स्नान करते हैं तथा नये वस्त्र पहनते हैं। उत्तर भारत के हिन्दू व्यापारी इस दिन अपने नये बही-खातों का प्रारम्भ करते हैं एवं आने वाले वर्ष में सफलता एवं समृद्धि प्राप्ति हेतु प्रार्थना करते हैं। हिन्दू जन दिन में अपने घरों को स्वच्छ एवं सुसज्जित करते हैं तथा रात्रि में मिट्टी के दीपक प्रज्वलित कर उन्हें आलोकित करते हैं। मुम्बई एवं अमृतसर में रोशनी से की गयी सुन्दर सजावट दर्शनीय होती है। सायंकाल में अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के विशाल सरोवर के चारों ओर के सोपानों पर सहस्रों दीप जलाये जाते हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी गोवर्द्धन पूजा एवं समष्टि भण्डारे का आयोजन करते हैं।

हे राम! आपके हृदय-प्रकोष्ठ में ज्योतियों की परम ज्योति, स्वप्रकाशमान आत्म-ज्योति नित्य-निरन्तर देदीप्यमान हो रही है। शान्तिपूर्वक बैठिए। अपने नेत्रों को बन्द कर लीजिए। इन्द्रियों को अन्तर्मुखी कर मन को इस परम ज्योति पर एकाग्र करिए एवं आत्म-प्रबोधन प्राप्त कर वास्तविक दीपावली मनाइए।

अहंकार ही वास्तविक नरकासुर है। आत्मज्ञान के खड्ग से इस अहंकार का नाश करिए एवं वैश्विक परम ज्योति भगवान् श्री कृष्ण में लीन हो कर अन्त:प्रबोधन की आध्यात्मिक दीपावली का आनन्द उठाइए।

जो सबको देखता है, जिसे कोई नहीं देख पाता है; जो बुद्धि, सूर्य, चन्द्र, तारकवृन्द तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित करता है परन्तु जिसे ये सभी प्रकाशित नहीं कर सकते हैं, वही ब्रह्म है। वही आत्मा है। ब्रह्म में संस्थित होकर वास्तविक दीपावली मनाइए तथा आत्मा के शाश्वत आनन्द का उपभोग करिए।

वहाँ सूर्य प्रकाशित नहीं होता है, चन्द्रमा एवं तारागण भी प्रकाशमान नहीं होते हैं, न ही वहाँ विद्युत् चमकती है तो इस अग्नि की बात ही क्या है। आत्म-ज्योति की एक किरण की विश्व की समस्त प्रकाशमान वस्तुओं से तुलना असम्भव है। स्वयं को ज्योतियों की इस ज्योति में लीन कर दीजिए एवं सर्वश्रेष्ठ दीपावली मनाइए।

अनेक दीपावली उत्सव व्यतीत हो चुके हैं, परन्तु अधिकांशत: व्यक्तियों के हृदय अमावास्या की रात्रि सदृश अन्धकारमय हैं। व्यक्तियों के घर तो दीपज्योति से आलोकित हैं परन्तु हृदय अज्ञानान्धकार से ग्रस्त हैं। हे मानव! अज्ञान की निद्रा से जागिए। ध्यान एवं विचार के द्वारा, आत्मा के कभी उदय-अस्त न होने वाले शाश्वत प्रकाश का अनुभव करिए तथा अज्ञानान्धकार का नाश करिए।

आप सभी पूर्ण अन्त:प्रबोधन प्राप्त करें। ज्योतियों की परम ज्योति आपकी बुद्धि को आलोकित करे। आप सभी अक्षय आत्मिक सम्पदा प्राप्त करें। आप भौतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में भव्य समृद्धि प्राप्त करें।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

गुरु तत्त्व के प्रकट रूप भगवान् कार्तिकेय

(परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

उस वैश्विक शाश्वत सत्ता को श्रद्धास्निग्ध नमन जो सर्वव्यापक है तथा अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का स्रोत, आश्रय एवं अन्तिम लक्ष्य है। उन, सबके अन्तर्वासी प्रभु को बारम्बार वन्दन, जिनके लिए आपका शरीर चलता-फिरता मन्दिर तथा आपका आध्यात्मिक हृदय गर्भगृह है, जहाँ वे आपके उज्ज्वल आत्मा के रूप में देदीप्यमान हैं।

परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज को प्रेमपूर्ण प्रणाम जिन्होंने हमें यह अन्तर्दृष्टि प्रदान की है कि वह परम सत्ता ही एकमात्र सत्य है; वही हमारा स्रोत, आश्रय एवं लक्ष्य है तथा वे प्रभु सदा-सर्वदा हमारे भीतर वास करते हैं।

हमारे प्रिय एवं पूज्य गुरुदेव ने मानवता के प्रति यही उद्घोषणा करने हेतु जीवन व्यतीत किया कि मानव जीवन का मुख्य तथ्य है कि हम सब भगवान् में ही वास कर रहे हैं, संचरण कर रहे हैं तथा उनमें ही संस्थित हैं। भगवान् ही हमारे स्रोत एवं अन्तिम लक्ष्य भी हैं तथा उनके दिव्य अनुभव की प्राप्ति हेतु ही हमें यह जीवन मिला है। हमारे प्रिय गुरुदेव इस दिव्य अनुभव के मूर्तिमन्त विग्रह थे। पिछले तीन दिनों से आश्रम जिन कार्तिकेय भगवान् (शरवणभव अथवा सुब्रह्मण्य) की आराधना में संलग्न है, श्री गुरुदेव उन कार्तिकेय भगवान् के दिव्य परिवार को बनाने चार तत्त्वों के साकार विग्रह भी थे।

यह दिव्य परिवार योगेश्वर शिव एवं आदि शक्ति दुर्गा अथवा पार्वती, महाशक्ति-पराशक्ति का परिवार है। इसमें लक्ष्य प्राप्ति के दृढ़ संकल्प एवं निश्चय का पक्ष भी समाहित है जो समस्त बाधाओं का निवारण कर पूर्णता प्रदान करता है। उनके परिवार के इस पक्ष का प्रतिनिधित्व गणाधिराज करते हैं, वे गणपति हैं, विघ्नेश्वर एवं सिद्धिविनायक हैं। वे सतत प्रयास तथा 'करो अथवा मरो' की मानसिक अभिवृत्ति के अभिव्यक्त रूप हैं। एक बार हल हाथ में लेने के पश्चात् स्वर्णिम फसल की प्राप्ति पर्यन्त पीछे नहीं देखना है अर्थात् लक्ष्य निर्धारण के पश्चात् उसकी प्राप्ति पर्यन्त प्रयास नहीं छोड़ना है। यह दृढ़ निश्चय ही बाधाओं का निराकरण कर सफलता प्रदान करता है। इस दिव्य परिवार के ये तीन अंग हैं तथा परिवार चौथे अंग देवसेनापति अर्थात् भगवान् कार्तिकेय से पूर्ण होता है जो वह कार्य करते हैं, जो अर्जुन ने युद्ध के प्रारम्भ में नहीं किया था।

भगवान् कार्तिकेय दृढ़ संकल्प एवं निश्चय का वह क्रियान्वित रूप हैं जो निरन्तर अग्रगामी दिशा में सक्रिय है तथा जिसे कोई नहीं रोक सकता है। वे समस्त आवश्यक गुणों यथा निर्भयता, साहस एवं वीरता से सम्पन्न हैं। वे अत्यधिक उदार भी हैं तथा उनमें वे सभी गुण हैं जो एक साधक में होने चाहिए।

आध्यात्मिक इकाई को पूर्ण करने वाले ये चारों घटक गुरु तत्त्व में उपलब्ध होते हैं। गुरु योग में प्रतिष्ठित होते हैं। वे योगेश्वर हैं, तपोनिष्ठ हैं, ध्याननिष्ठ हैं। आत्म-साक्षात्कार से प्राप्त शक्ति से परिपूर्ण, वे इस शक्ति को अपनी शिक्षाओं एवं जिज्ञासुओं के सतत मार्गदर्शन के माध्यम से विश्व को प्रदान करने के प्रति समर्पित हैं। वे अत्यन्त उत्साहपूर्वक जन-जन को आध्यात्मिक जीवन एवं आदर्श धार्मिक जीवन व्यतीत करने हेतु प्रेरित करते हैं। वे शंकाओं का समाधान करते हैं,

प्रश्नों का उत्तर देते हैं एवं बाधाओं का निराकरण करते हैं। वे साधक के पथप्रदर्शन हेतु सदैव तत्पर रहते हैं।

ऐसे ही हैं हमारे गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज जो अपने साहित्य के रूप में एक अतुलनीय निधि स्वरूप हैं। उनका साहित्य वैश्विक मानव समुदाय के लिए एक महान् धरोहर है, यह सम्पूर्ण विश्व में परिव्याप्त है तथा इसने धरा की रक्षा की है। इसका विविध भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। श्री गुरुदेव की शिक्षाएँ आधुनिक वैश्विक मानव समाज को जाग्रत करने वाली महानतम शक्तियाँ हैं।

जो सच्चा साधक विनम्रतापूर्वक आध्यात्मिक प्रगति की इच्छा एवं लक्ष्य प्राप्ति की गहन उत्कण्ठा लिये श्री गुरुदेव के दिव्य सान्निध्य में आता है, श्री गुरुदेव उसके भीतर वास करने लगते हैं, उसके जीवन के आन्तरिक संचालक एवं पथप्रदर्शक बन जाते हैं। उसके पश्चात् श्री गुरुदेव के निरीक्षण एवं निर्देशन में आपकी साधना, आपकी भक्ति, सेवा-भाव, आत्मानुशासन एवं ध्यान में उत्तरोत्तर प्रगति होने लगती है; और तब आपकी विजय सुनिश्चित है। आप अज्ञानान्धकार से परे जा कर मोक्ष के सुप्रभात का दर्शन करेंगे एवं सदा के लिए शान्ति एवं आनन्द में सुप्रतिष्ठित हो जायेंगे।

यह उनके दिव्य सान्निध्य का प्रभाव है जिसमें हम सभी आज एकत्र हुए हैं। यदि आपके पास कान हैं, तो आप सुन सकते हैं; यदि आँखें हैं तो देख सकते हैं; यदि आपमें श्रद्धा है तो आप यह समझ पायेंगे। यदि आप अपनी क्षुद्र 'मैं' का त्याग करके अहंकारशून्य हो जायें, तब आप उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति की शक्ति का अनुभव कर पायेंगे तथा उनका आध्यात्मिक प्रकाश जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आपका मार्गदर्शन करेगा।

यह गुरु तत्त्व है। इसके विषय में गूढ़ अथवा अस्पष्ट रूप में क्यों कहा जाये? वस्तुतः श्री गुरुदेव के दिव्य सान्निध्य में आप योगेश्वर शिव के सान्निध्य में हैं। आप आदि शक्ति, परा शक्ति, महा शक्ति के सान्निध्य में हैं। उनके ज्ञानोपदेश, उनकी प्रेरणा एवं उनके व्यावहारिक निर्देश विघ्ननाशक एवं सफलताप्रदायक शक्ति है। ये आपको समस्त योगों के लक्ष्य आत्मानुभव, आत्म-साक्षात्कार की प्राप्ति करायेंगे।

इस प्रकार भगवान् कार्तिकेय की आराधना गुरु की आराधना से भिन्न नहीं है; जो योगेश्वर भगवान् शिव के योग-परिवार को बनाते हैं।

गुरु मात्र ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर नहीं हैं, **'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः'**, वे अव्यक्त परब्रह्म तत्त्व ही नहीं हैं **'गुरुः साक्षात् परब्रह्म'**; उनमें दिव्य शक्ति के ये चारों पक्ष समाहित हैं—

त्वं हि विष्णुर्विरञ्चिस्त्वं त्वं च देवो महेश्वरः।
त्वमेव शक्तिरूपोऽसि निर्गुणस्त्वं सनातनः।।

उनमें दिव्य शक्ति के ये चारों पक्ष निहित हैं—योग की शक्ति, दिव्यता की शक्ति अर्थात् दैवी सम्पद्, लक्ष्यप्राप्ति हेतु संकल्पबद्ध कार्य करने की शक्ति तथा मार्गदर्शन की शक्ति। उनकी इस मार्गदर्शक शक्ति के प्रति यदि समर्पण किया जाये, उनके आदेशों-निर्देशों का पालन किया जाये तो विजय सुनिश्चित है। भगवान् कार्तिकेय गुरु तत्त्व के उज्ज्वल प्रकट रूप हैं, जो प्रकाश एवं अन्धकार तथा दैवी एवं आसुरी शक्ति के मध्य हो रहे शाश्वत संघर्ष में आपका मार्गदर्शन करते हैं।

भगवान् कार्तिकेय की छह दिवसीय वार्षिक आराधना के समय गुरु तत्त्व की महत्ता विषयक विचार आपके समक्ष रखते हुए मैं वाणी को विराम देता हूँ।

ॐ नमो नारायणाय। ॐ नमो नारायणाय। ॐ नमो नारायणाय।

(अनुवादिका : स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी)

♦ ♦ ♦

संकीर्तन ईश्वर का स्वरूप है

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

संकीर्तन ईश्वर का स्वरूप है। ध्वनि ही संकीर्तन है। संकीर्तन वेदों का सार है। चारों वेदों की उत्पत्ति ध्वनि से हुई है। ध्वनि के चार प्रकार हैं—(१) वैखरी (जीभ से), (२) मध्यमा (कण्ठ से), (३) पश्यन्ती (हृदय से), और (४) परा (नाभि से)। ध्वनि ब्रह्मा की नाभि से ही उत्पन्न होती है। वेद भी ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए हैं। अतएव संकीर्तन (ध्वनि) और वेदों का उद्गम-स्थान एक ही है।

एक-साथ बैठ कर शुद्ध प्रेम और भावपूर्वक स्वर-ताल से भगवन्नाम-गाने को ही संकीर्तन कहते हैं। नाम और नामी अभिन्न हैं। नाम नामी से बड़ा है। यह सांसारिक अनुभव भी है कि मनुष्य तो मर जाता है, लेकिन उसके नाम की याद बहुत दिनों तक की जाती है। कालिदास, शेक्सपियर, वाल्मीकि, तुलसीदास अब नहीं रहे, लेकिन उनकी याद अभी भी की जाती है। तो नाम और कुछ नहीं, चैतन्य मात्र है। भगवान् के नामों का भाव एवं प्रेम सहित गान करना ही संकीर्तन है।

'अखण्ड' का अर्थ है—लगातार अथवा खण्डन रहित। 'कीर्तन' का अर्थ है—प्रभु के नामों का गान करना। 'अखण्ड कीर्तन' का अर्थ है—लगातार भगवन्नाम का गान करना। अखण्ड कीर्तन बहुत ही प्रभावोत्पादक आध्यात्मिक साधन है। इससे सभी कुप्रवृत्तियों का नाश हो जाता है। अखण्ड कीर्तन द्वारा मन सहज ही में वश में किया जा सकता है। बाह्य विषयों की ओर जाने वाली मन की घुमक्कड़ प्रवृत्ति को अखण्ड कीर्तन द्वारा ही सरलतापूर्वक रोका जा सकता है। अखण्ड कीर्तन की साधना द्वारा मन को न तो समय मिलता है और न मौका ही कि वह बाह्य विषयों के सम्बन्ध में कुछ सोच सके। मन पर विजय प्राप्त करने के लिए अखण्ड कीर्तन एक अचूकऔर सरल साधन है। इससे मन सात्त्विक भावों से भर जाता है। अखण्ड कीर्तन में परम शान्ति और परम सुख है।

अखण्ड कीर्तन समाधि-अवस्था में बहुत शीघ्र पहुँचा देता है। यह हृदय को बहुत जल्दी शुद्ध करता है, मन को सर्वाधिक स्वच्छता प्रदान करता है और अगणित लाभ पहुँचाता है। तीन दिन के उत्सव का प्रभाव टिकाऊ नहीं हो सकता। समाधि-अवस्था में पहुँचा देने तथा पवित्र चित्ताकर्षक भाव में ला देने में अखण्ड कीर्तन से बढ़ कर शक्तिशाली दूसरा कोई साधन नहीं है। यदि कलियुग में अखण्ड कीर्तन का संचालन विधिपूर्वक किया जाये, तो वह सौ अश्वमेध यज्ञों के बराबर होता है। अखण्ड कीर्तन करने से जो फल मिलता है, उस फल को यदि तराजू के एक पलड़े पर रखा जाये और सौ अश्वमेध यज्ञों के फल को दूसरे पलड़े पर रखा जाये, तो पहला पलड़ा नीचे चला जायेगा। कलियुग में तो अखण्ड कीर्तन विशेष उपयुक्त है। इसमें आपको कुछ खर्च नहीं करना पड़ता।

अखण्ड कीर्तन के समय **'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।'** ही गाना चाहिए।

द्वापर के अन्त में देवर्षि नारद ने ब्रह्माजी के पास जा कर पूछा कि कलियुग में भवसागर पार करने के लिए सरलतम साधन कौन-सा है? ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि मनुष्य सोलह नाम युक्त महामन्त्र **(हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।)** गान द्वारा ही संसार से तर सकता है। ये नाम अविद्या का नाश करते हैं जो सोलह प्रकार की कलाओं से घिरे हुए जीव में देहाभिमान उत्पन्न करती है। तब जिस प्रकार बादलों के हट जाने पर केवल सूर्य चमक उठता है, उसी प्रकार अविद्या-नाश के पश्चात् केवल परब्रह्म ही प्रकाशमान हो उठते हैं। इन नामों का जप-कीर्तन करने में किसी नियम की आवश्यकता नहीं है। ब्रह्माजी ने और भी कहा—''जो कोई भी पवित्रावस्था अथवा अपवित्रावस्था में इन नामों का उच्चारण करेगा, वह उसी 'ब्रह्म' के लोक को प्राप्त होगा अथवा उसकी निकटता का अनुभव करेगा अथवा तद्रूप होगा या उसी में लीन हो जायेगा। वह तुरन्त ही सभी बन्धनों से मुक्त हो जायेगा।''

वह व्यक्ति जो संकीर्तन करता है, देह और दुनियाँ को भूल जाता है। संकीर्तन देह-ज्ञान को दूर करता है। यह उच्च अन्तर्ज्ञान उत्पन्न करता है। तुकाराम एक निरक्षर किसान थे। वे स्वयं हस्ताक्षर भी नहीं कर सकते थे। परन्तु वे सदा-सर्वदा प्रभु के नामों का संकीर्तन किया करते थे। उन्हें भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन हुआ था। संकीर्तन द्वारा ही उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये थे। उनके प्रभावशाली 'अभंग' आजकल बम्बई विश्वविद्यालय के एम. ए. के छात्रों के लिए आवश्यकीय पाठ्य-सामग्री हैं! अनपढ़ तुकाराम ने ये ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया। उन्होंने संकीर्तन द्वारा ही ज्ञान की धारा प्रवाहित कर दी। वह सतत संकीर्तन करते हुए भाव-समाधि के द्वारा 'पवित्र उद्गम' को पहुँच गये। इससे क्या यह स्पष्ट सिद्ध नहीं होता कि ईश्वर विराजमान है और उसका स्वरूप ज्ञान है एवं उस ज्ञानोपलब्धि में संकीर्तन की अपार शक्ति है?

इस कलियुग में संकीर्तन भगवद्-दर्शन करा देता है। संकीर्तन प्रेम को बढ़ाता है। सरल, सुलभ तथा शीघ्रातिशीघ्र ईश्वर-साक्षात्कार कराने वाला साधन संकीर्तन ही है। जो व्यक्ति प्रारम्भिक काल में मनोरंजन के लिए संकीर्तन करते हैं, वे बाद में अवश्य ही इसके पवित्रकारी प्रभाव को समझेंगे और तब वे श्रद्धाभाव सहित संकीर्तन करेंगे। प्रभु के नामों में अद्भुत शक्ति है। मनुष्य केवल रोटी पर जीवित नहीं रह सकता; परन्तु वह भगवन्नाम तथा भगवत्कृपा पर जीवित रह सकता है।

अखण्ड कीर्तन से उत्पन्न स्वर-स्पन्दन भक्त के मन को वश में करने में बहुत सहायक होता है। वह मन पर हितकारी प्रभाव डालता है। यह मन को इसकी पुरानी लकीर से हटा कर अत्यन्त गौरव के महत्त्वपूर्ण दिव्य शिखर पर चढ़ा कर स्थिर कर देता है। यदि कोई भगवन्नाम का संकीर्तन अपने हृदय के अन्तस्तल से विशुद्ध भाव से और प्रेमपूर्वक करे, तो पशु-पक्षी भी प्रभावित हो जायेंगे। वे भी वन्दना करने लगेंगे। जहाँ पर संकीर्तन होता है, उस स्थान पर ऋषि तथा सिद्ध गण पधारते हैं। आप पण्डाल के चारों ओर दिव्य आभा देख सकते हैं।

वह भूमि धन्य है जहाँ अखण्ड संकीर्तन होता है। द्विगुणित धन्य हैं वे, जो इस प्रकार के धार्मिक यज्ञ का आयोजन करते हैं! त्रिगुणित धन्य हैं वे, जो मधुर भगवन्नाम गान करते हुए अमृतरस का पान करते हैं!! बलिहारी है ऐसे नम्र पिपासु साधकों की!!!

आप सब प्रभु के नामों को लेते हुए तथा नियमित अखण्ड संकीर्तन करते हुए कैवल्य-पद की प्राप्ति करें! आप सभी दिव्य परमानन्द में डूबे रहें!! ♦ ♦ ♦

दिव्य नाम

(परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

सौभाग्यशाली अमर आत्मन्। प्रिय साधक-वृन्द! निर्भयता और मुक्ति की ओर ले जाने वाले, दुःख और कष्टों के अन्त की ओर ले जाने वाले तथा शाश्वत सन्तोष और परम आनन्द की उपलब्धि की ओर ले जाने वाले पथ पर अग्रसर होते हुए प्रिय मुमुक्षु-वृन्द!

भगवान् अमूर्त, अव्यक्त, अदृष्ट तथा अगोचर हैं। 'विष्णुसहस्रनाम' में यह तथ्य पूर्णतः स्पष्ट कर दिया गया है। वह '**गूढः**' (छिपा हुआ) है : '**एको देवः सर्वभूतेषु गूढः**' (वह एक ही परम देव परमेश्वर समस्त प्राणियों में छिपा हुआ है)। वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, अवाङ्मनोगोचर है (उसे इन्द्रियों तथा मन द्वारा जाना नहीं जा सकता), '**यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह**' (जहाँ से मन-सहित वाणी आदि इन्द्रियाँ उसे न पा कर लौट आती हैं)। वह विचार-वाणी से अतीत है।

फिर, भगवान् तक पहुँचने का मार्ग क्या है? हम नाम और रूप की शैली में ही सोच सकते हैं; हम स्थूल भौतिक चेतना में आबद्ध हैं। नाम और रूप के आधार के बिना हमारे अन्तःकरण में कोई विचार (आत्मा की प्रकृति के विषय में अन्वेषण) नहीं उत्पन्न होता है। तब फिर वह क्या है, जो हमें उससे जोड़ सके, जो विचार, वाणी और मन से परे है, बुद्धि की पकड़ से परे है। हम—जो स्थूल प्रत्ययात्मक चिन्तन में, वस्तुपरक विचारों में आबद्ध हैं—कैसे अपने को उस 'अवाङ्मनोगोचर' से सम्बद्ध कर सकें? उस तक पहुँचने के लिए क्या कोई सेतु है? हमारी समस्त वृत्तियाँ विषयाकार वृत्तियाँ हैं। हम देश-काल, नाम-रूप, यहाँ-वहाँ, यह-वह की शब्दावली में ही विचार कर सकते हैं—अनुभवातीत परम तत्त्व की शब्दावली में नहीं। सीमित ससीम चेतना की इस स्थिति में बद्ध हैं हम।

हमारे उससे जुड़ने के प्रयास की क्या कोई सम्भावना है, जो असीम है तथा जो देश-काल, नाम-रूप से अतीत है?

ज्ञात और अज्ञात के, ससीम और असीम के, व्यक्त और अव्यक्त के तथा व्यक्ति और समष्टि के बीच की बाधा-रूप समस्या का समाधान है—दिव्य नाम के अभ्यास का महान् विज्ञान। दिव्य नाम एक केवट की भाँति है जो दोनों तटों पर जाता है। केवट इस तट पर आता है और हमें उस पार ले जा सकता है; क्योंकि वह दूसरे तट पर भी जाता है। दिव्य नाम से यह एक महान् लाभ प्राप्त होता है।

भगवान् अमूर्त हैं। मन्दिरों, मस्जिदों, सिनेगॉगों (यहूदी उपासना-गृहों) और गिरजाघरों में भगवान् के विषय में हम जो-कुछ जान पाते हैं, वह मनुष्य द्वारा ही रचित हुआ है, प्रत्ययात्मक है। परम तत्त्व-सम्बन्धी अपने विचारों तथा अपनी कल्पना को हमें प्रतीकों और मूर्तियों के ऊपर अध्यारोपित करना होता है। परन्तु इस अमूर्त सत्ता का एक मूर्त पक्ष भी है जो हमारे साथ है और जिसका हम सचमुच सर्जन कर सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं। यह मूर्त पक्ष है (दिव्य) नाम—जिसका हम स्वयं बहुत स्पष्ट रूप से उच्चारण कर सकते हैं। इसकी एक ध्वनि

है जिसको हम अपने कानों से सुन सकते हैं। इसे हम अपने हाथ से लिख भी सकते हैं।

भगवान् का रूप हमारी समझ से परे है; किन्तु यहाँ हम भगवान् के उस पक्ष की चर्चा कर रहे हैं, जो उससे अभिन्न है और जिसे प्राचीन काल में ही खोज लिया गया था। यह है परम निरपेक्ष सत्ता का मन्त्र। यह एक 'सत्ता' ही है जो नाम है तथापि यह निराकार है। इसका निराकार जगत् से सम्पर्क है। निराकार होने के कारण यह रूप-रहित है। इस कारण इसका निराकार परब्रह्म तत्त्व से सम्पर्क है। परब्रह्म निराकार तथा निर्गुण है; परन्तु यहाँ निराकार किन्तु सगुण है। यह शब्द के रूप में है। यह नाम के रूप में है। इसमें स्पन्दन है। इसकी एक इन्द्रिय-ग्राह्य ध्वनि है जिसे हम अपने स्थूल कर्णों से सुन सकते हैं। हम इसकी ध्वनि को टेप में अंकित कर सकते हैं, पुनः इसे सुन सकते हैं तथा इसे प्रसारित कर सकते हैं। इस प्रकार इसमें कुछ ऐसा है जिसका हम इच्छानुसार उपयोग कर सकते हैं।

और, इससे सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण तथा विस्मयकारक बात यह है कि यह ध्वनि के रूप में प्रकटित दिव्यता ही है। यह दिव्यता उस शब्द या नाद के रूप में प्रकटित है जिसको वेद 'शब्द-ब्रह्म' तथा 'नाद-ब्रह्म' के नामों से पुकारते हैं। 'वह' जो नाद से परे है, नाद द्वारा पकड़ में आ जाता है। इस विशिष्ट नाद द्वारा परमात्मा तक पहुँचा जा सकता है; क्योंकि यह नाद निराकार है। इस प्रकार यह एक-साथ ही परलोक तक, निराकार परब्रह्म तत्त्व तक पहुँचने में सक्षम एक तत्त्व है और इसकी सगुण—वह क्षेत्र जिसमें हम रह रहे हैं—तक भी पहुँच है।

हमारे लिए प्रत्येक वस्तु कुछ गुण रखती है। हमारे द्वारा बोधगम्य पाँच मुख्य गुणों (रूप, रस, शब्द, स्पर्श और गन्ध) में से एक गुण इस (नाम) में है। यह गुण शब्द है और परमात्मा से अभिन्न है। नाम और नामी अभिन्न हैं। इस प्रकार प्रत्येक मन्त्र, जिसमें दिव्य नाम है, जिसका केन्द्र-बिन्दु दिव्य नाम ही है—**ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो नारायणाय, ॐ श्रीराम, ॐ श्रीकृष्णाय नमः**—की संरचना परमात्मा के प्रत्यक्षतः प्रकट इस रूप—नाद अर्थात् नाम—पर ही आधारित है।

इसीलिए महर्षि पतंजलि ने अपने एक सूत्र में कहा है कि जप द्वारा पूर्णता की प्राप्ति हो सकती है। और जगद्गुरु भगवान् कृष्ण कहते हैं—''अपने शरीर का त्याग करते समय जो मेरा नाम जपता है, वह मुझे प्राप्त होता है। इस नश्वर जगत् में वह दोबारा लौट कर नहीं आता।'' जिन्होंने दिव्य नाम-जप की साधना करके पूर्णता प्राप्त कर ली है, उनके प्रत्यक्ष अनुभव ने नाम और नामी के अभेद को प्रमाणित कर दिया है।

ऐतिहासिक काल-खण्डों—जिनका स्मरण हमें अभी भी है—के परिचित विभूतिमान व्यक्तियों में से एक थे शिवाजी के गुरु श्री समर्थ रामदास। उन्होंने भगवान् का साक्षात्कार प्राप्त किया था। उन्होंने **'श्री राम, जय राम जय जय राम'** मन्त्र के जप के अतिरिक्त कोई अन्य साधनाभ्यास नहीं किया। और भारतीय उपमहाद्वीप के दूसरे छोर पर चैतन्य महाप्रभु ने नाम-संकीर्तन—**'हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे। हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे।''** के द्वारा दिव्य चेतना प्राप्त की और भगवच्चेतना के आनन्द में उन्मत्त हो गये। भगवच्चेतना के परम गन्तव्य तक पहुँचने की इस विधि का प्रचार उन्होंने पूरे भारतवर्ष में किया। कलियुग में एक अचूक तथा विश्वसनीय विधि के रूप में उन्होंने दिव्य नाम की सर्वोत्कृष्टता स्थापित की—**''कलियुग केवल नाम अधारा।''**

और यह केवल एक प्राचीन प्रणाली का पुनःप्रवर्तन है। भगवान् श्री राम के इस धरती पर अवतरित होने से पूर्व ही रत्नाकर ने दिव्य नाम के निरन्तर जप द्वारा पूर्णता प्राप्त कर ली थी। वह निरक्षर, अशिष्ट, अशिक्षित और वन की शिकारी जनजाति का एक व्यक्ति था। उसने वास्तव में दिव्य नाम का उलटा जप किया था। महान् सन्त कवि तुलसीदास जी कहते हैं—''पूरा विश्व जानता है कि वाल्मीकि नाम-जप द्वारा—उलटे नाम के जप द्वारा—ब्रह्म-चेतना को प्राप्त हुए तथा उन्होंने **'अहं ब्रह्मास्मि'** का साक्षात्कार प्राप्त किया।'' वह भारतीय आध्यात्मिक इतिहास के एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विख्यात हैं जिन्होंने जप और केवल जप द्वारा ब्रह्म-चेतना की सर्वोच्च स्थिति प्राप्त की; क्योंकि वह और कुछ जानते ही नहीं थे। वे संस्कृत, वेदान्त, उपनिषद्, भागवत इत्यादि कुछ भी नहीं जानते थे। वह हठयोग, अष्टांगयोग तथा कुण्डलिनीयोग से अनभिज्ञ थे। आसन, प्राणायाम इत्यादि भी वह नहीं जानते थे। अतः वह जितना कर सकते थे, उतना ही उन्होंने किया। उन्होंने राम-नाम को पकड़ लिया और ब्रह्म-चेतना से सम्पन्न हो कर एक प्रबुद्ध मनीषी बन गये। वह महान् ऋषि वाल्मीकि हुए उन्होंने अमर काव्य 'वाल्मीकि रामायण' की रचना की। पूर्व-काल में वह एक क्रूर, अति-उग्र और पापी व्यक्ति थे; तथापि वे अपनी आध्यात्मिक चेतना में ब्रह्म के साथ एकाकार हो गये केवल दिव्य नाम-जप के द्वारा।

गत तीन-चार सौ वर्षों में भारतवर्ष में रहने तथा आने वाले समस्त सन्त और आध्यात्मिक गुरु भगवत्साक्षात्कार प्राप्त करने की अचूक और विश्वसनीय विधि के रूप में दिव्य नाम-जप पर विशेष बल देना नहीं भूले। गुरुदेव ने अपने बीस आध्यात्मिक नियमों के तृतीय नियम में कहा है—''किसी मन्त्र का अथवा ॐ का अपनी रुचि तथा प्रवृत्ति के अनुसार दिन में १०८ से २१,६०० बार तक जप करें।'' यौगिक गणना के अनुसार, हम प्रत्येक २४ घण्टे में २१,६०० बार साँस लेते हैं। प्रत्येक साँस के साथ भगवान् का नाम लेने का परामर्श दिया जाता है। इस प्रकार यह तृतीय नियम इस अचूक, विश्वसनीय विधि को अपनाने के विषय में है। इसी में आपका सर्वोच्च कल्याण निहित है। इस कलियुग में दिव्य नाम-स्मरण का मार्ग सर्वोत्कृष्ट, सबसे कम जटिल, सबसे अधिक प्रभावोत्पादक, अचूक, सरल और प्रभावी मार्ग है। गुरुदेव की कृपा आपके आध्यात्मिक जीवन और साधना में आपको सफलता प्रदान करे! परमात्मा का आशीर्वाद आपको प्राप्त हो!

हे मनुष्य! ईश्वर के नाम की शरण में जा। नामी और नाम अभिन्न सत्ताएँ हैं। निरन्तर ईश्वर का नाम जपा कर। प्रत्येक श्वास के साथ ईश्वर के पवित्र नामों का उच्चारण कर। इस कराल कलि-काल में ईश्वरत्व तक पहुँचने के लिए नाम-स्मरण अथवा जप सबसे अधिक सुगम, शीघ्र, सुरक्षित और निश्चित मार्ग है। यह अमरत्व और अनन्त आनन्द का दाता है। हे परमात्मन्, तेरी और तेरे नाम की महिमा अपरम्पार है! किसने उसको पूर्ण रूप से जाना है और कौन जानेगा?

—स्वामी शिवानन्द

पूर्व-अंक से आगे :

मैं इसका उत्तर दूँ?

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

२३३

जब मैं उत्तरकाशी में रह रहा था तो मैं उत्तम निष्ठा, उदात्त वृत्तियों तथा श्रेष्ठ धर्म की भावना से सम्पन्न था। अब यहाँ मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करते ही वह सब लुप्त हो गयी हैं, यद्यपि साधना मैं अब भी करता हूँ। ऐसा क्यों? पहले की भाँति स्वयं को मैं कैसे उन्नत करूँ?

सांसारिक मनोवृत्ति वाले लोगों का सम्पर्क तत्काल मन को प्रभावित कर देता है। विक्षेप उत्पन्न हो जाता है। मन अनुकरण करता है। कुप्रवृत्तियाँ और विलासप्रियता बढ़ने लगती है। अनुपयुक्त वातावरण और कुसंगति अत्यन्त गहरा प्रभाव डालते हैं जो साधक के मन को आच्छादित कर देते हैं। पुराने संस्कार पुनः हावी होने लगते हैं। मैं आपको पुनः तुरन्त उत्तरकाशी लौट जाने का परामर्श दूँगा। एक क्षण का भी विलम्ब न करें। भोजन के सूक्ष्म अंश से मन की रचना होती है, अत: यह भोजन बनाने वाले के साथ आसक्त हो जाता है। किसी के भी आभार के तले न आयें। स्वतन्त्र जीवन यापन करें। स्वयं अपने-आपके ऊपर निर्भर रहें।

२३४

भगवान् क्या हैं?

यदि मैं आपके एक अच्छा सा ज़ोरदार थप्पड़ लगा दूँ, तो उस थप्पड़ को कौन जानता है? वह जानने वाला 'वेत्ता' भगवान् हैं। जब किसी तीव्र इच्छा की पूर्ति होती है, तब आनन्द की वह अवस्था जिसमें मन शान्त हो जाता है, वह भगवान् हैं। आपके नेत्रों को प्रकाशित करने वाली ज्योति भगवान् हैं। आपके चिन्तन की स्फुरणा भगवान् हैं, वही आपके मन के रचयिता हैं, आपके मन के स्रोत, उसका आधार, आपके प्राण, इन्द्रियों और शरीर के अधिष्ठान भगवान् हैं।

वृक्ष का अस्तित्व है, यह प्रफुल्लित है, उद्भासित है, यह प्रसन्नता देता है। यह तीन पक्ष—अस्ति-भाति-प्रिय अथवा सत्-चित्-आनन्द—भगवान् हैं। भगवान् प्रेम हैं। भगवान् सौन्दर्य हैं। भगवान् आनन्द हैं। भगवान् समस्त प्रकाशों के प्रकाश हैं। सभी मनों के मन, प्राणों के प्राण, और समस्त आत्माओं की आत्मा भगवान् हैं। वह आपके हृदय में प्रकाशित हैं और वे आपसे अविच्छिन्न हैं। सदैव उनकी विद्यमानता को अनुभव करें। सदा, सर्वदा, सर्वत्र उनकी विद्यमानता को पहचानने का प्रयत्न करें। चलते-फिरते समय भी उनकी उपस्थिति को अपने साथ-साथ रखें।

२३५

भगवान् ने दुष्ट क्यों बनाये हैं?

क्योंकि यह संसार द्वन्द्वात्मक है, इसलिए यहाँ यदि भले लोग हैं तो दुष्ट भी होंगे ही। कोई भी दुष्ट मनुष्य सदा के लिए दुष्ट नहीं होता। दुर्जन भी भविष्य में सज्जन हो जाता है। दुष्टता एक नकारात्मक गुण है। इससे कुछ भिन्न अस्तित्व इसका नहीं है। यदि दुर्जन न हों तो सज्जनता का, यदि बेईमानी न हो तो ईमानदारी का और यदि दुष्टता न हो तो भलाई का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। शठ की सत्ता नेक एवं भले व्यक्ति की महिमा प्रकट करने के लिए है। बेईमानी और ईमानदारी वस्तुत: एक

ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों केवल मन की ही रचनाएँ मात्र हैं। दुष्ट से दुष्ट मनुष्य में भी कुछ-न-कुछ सद्गुण होते हैं। पूर्णतया दुष्टता अथवा पूर्ण रूप से भलाई नहीं होती। अर्थात् कुछ-न-कुछ कमी तो रहती ही है। संसार के रंगमंच पर हो रहे नाटक में भगवान् अपनी लीला हेतु स्वयं ही दुष्ट की भूमिका में लीला करते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य कोई तो है ही नहीं।

२३६

जब मैं स्वर्गाश्रम में था तब आपश्री ने मुझसे कहा था कि हमें मुस्लिमों के हाथों से खाद्य-पदार्थ ले लेने चाहिए और ऐसा करते समय मन में कोई संकोच या दुविधा नहीं आनी चाहिए। किन्तु हमारे शास्त्र हमें यह शिक्षा देते हैं कि पापी के हाथ से खाद्य-सामग्री नहीं लेनी चाहिए। मुस्लिम गोमांसभक्षी हैं, उनके हाथों से हमें भोजन क्यों स्वीकार करना चाहिए?

यदि आप यह सोचते हैं कि अमुक व्यक्ति कुकर्मी है, तो उसके हाथ का भोजन न ग्रहण करें। यदि आपका विचार है कि भगवान् शिव अथवा हरि का कुकर्मी में भी निवास है, यदि आपका यह विचार दृढ़ है, तो आप किसी के भी हाथों से खाद्य-पदार्थ ग्रहण कर सकते हैं। अभी आपका दृष्टिकोण अत्यन्त सीमित है। आध्यात्मिक पथ पर अभी आपने चलना प्रारम्भ ही किया है। अभी आपका हृदय विशाल नहीं हुआ है। अभी आप बहुत अधिक जप करें तथा अन्य जो आध्यात्मिक साधनाएँ आपको मैंने सिखायी थीं, उन सबको मन लगा कर करें। 'उनकी' उपस्थिति पाषाण, पुष्प, चम्मच, तौलिये में—प्रत्येक वस्तु में अनुभव करें। कुछ समय के पश्चात् आप उन्नत हो जायेंगे। आप प्रत्येक वस्तु में केवल भगवान् के ही दर्शन करने लगेंगे। अभी तो आपके हृदय में अत्यन्त सुदृढ़ मुस्लिम-विरोधी संस्कार हैं। धीरे-धीरे इन्हें नष्ट कर डालें। किसी मुस्लिम को हृदय की गहराइयों से स्नेह करें। भक्तिभाव सहित उसकी सेवा करें। उसके उज्ज्वल नेत्रों में, उसके हृदय की धड़कन में प्रभु को निहारें। सात्त्विक आहार लें। उसे भगवान् को समर्पित करने के बाद प्रसाद रूप में ग्रहण करें। भोजन से पहले भगवन्नाम लें। इस तरह आप किसी भी प्रकार के अशुद्ध आहार का आध्यात्मीकरण कर सकते हैं।

२३७

कहते हैं कि योगाभ्यास केवल पुरुषों के लिए ही है, क्योंकि केवल उन्हें ही संयम अथवा नियन्त्रण की आवश्यकता है। आश्चर्य है कि फिर स्त्रियों के लिए कौन सा कार्य है? सम्भवतया घर में बैठना और सन्तानोत्पत्ति ही! किन्तु क्या यह सत्य है कि योगाभ्यास की केवल पुरुषों को ही आवश्यकता है? जैसे पुरुष महान् योगी बनते हैं, क्या स्त्रियाँ इसी प्रकार महान् योगिनी नहीं बन सकतीं? अथवा यह स्त्री-लिंग से भी सम्बन्धित है? आध्यात्मिक महानता और स्त्रियों में यह लिंग-भेद क्यों खड़ा है?

रानी चुडाला एक महान् योगिनी थीं। उनके पास अनेकों उच्च स्तर की सिद्धियाँ थीं। उन्होंने तो अपने पति शिखिध्वज को भी परिवर्तित कर दिया था और उसे मोक्ष-प्राप्ति में सहायता की थी। योगवासिष्ठ में रानी चुडाला का वृत्तान्त पढ़ कर देखें। स्त्रियों में वैराग्य और तितिक्षा की क्षमता अल्प होती है। उन्हें पुरुषों के समान क्षमताएँ प्राप्त नहीं हैं। इसीलिए महिलाओं में बहुत अधिक योगिनियाँ नहीं बन पायी हैं। महिलाएँ भगवान् के दर्शन अधिक सरलता से प्राप्त कर सकती हैं, क्योंकि उनमें स्नेह अथवा प्रेम का तत्त्व अधिक है और इसी कारण भक्ति की भावना का उनमें स्वाभाविक रूप से आधिक्य है। आध्यात्मिक महानता में लिंग-भेद बाधक नहीं है। गार्गी, मदालसा और सुलभा आदि सभी महान् योगिनियाँ थीं।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

आपका शान्ति-दूत :

प्रत्येक परिस्थिति में चट्टान की तरह अडिग रहना

(परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

आप अपनी प्रसन्नता का निर्माण स्वयं कर सकते हैं

हम एक अन्य ऐसे व्यक्ति का उदाहरण लेते हैं, जो स्वयं को बाह्य अनुभवों से शासित होने की अनुमति दे देता है। हम एक ऐसे युवक को ले लेते हैं जो अच्छी नौकरी पर लगा हुआ है, बहुत से मित्र हैं उसके और वह अत्यन्त सुखी जीवन जी रहा है। एक दिन जब वह अपने कार्यालय से अपनी 'स्पोर्ट्र्स-कार' में घर लौट रहा होता है, और जब लालबत्ती के संकेत पर गाड़ी रोकता है तो अनायास उसकी दृष्टि—दाहिनी और साथ वाली सड़क पर अत्यधिक सुन्दर लड़की, बिलकुल उसी जैसी गाड़ी में बैठी हुई पर—पड़ती है। उन दोनों की दृष्टि एक-दूसरे से टकराती है। यह युवक मौन तौड़ कर बोलने को लालायित होता है। उसी क्षणार्ध में यह युवक उस अति सुन्दर युवती के प्रेम में शिर से पाँव तक डूब जाता है।

अपने दुर्भाग्य से यह युवक परिचय बना सकने अथवा उसका पता-ठिकाना जान पाने में सफल नहीं हो पाता; किन्तु उसी क्षण से, वह हर पल इसी विचार में खोया रहता है, ''मैं उसे फिर से देखना चाहता हूँ। कौन जाने किसी दिन ऐसे ही पुनः किसी लालबत्ती पर मिल जाये!'' वह एक विचित्र सी व्याकुलता से घिरा रहता है और अपने किसी भी कार्य में मन नहीं लगा पाता। किन्तु एक दिन अचानक ही संयोगवश वे दोनों मिल जाते हैं। वह इस बार पहले वाली भूल नहीं दोहराता और एक क्षण भी गँवाये बिना, तत्काल उसका परिचय पाने के लिए आगे बढ़ता है। किन्तु दुर्भाग्य से उस बेचारे को ज्ञात होता है कि उस लड़की की तो पहले ही सगाई हो चुकी है! क्योंकि जब युवक ने उसे रात्रिभोज का निमन्त्रण दिया, तो उसने उत्तर दिया, ''ओह, मुझे दुःख है कि आज तो मैं अपने मंगेतर के साथ बाहर भोजन करने जा रही हूँ।'' और यह अभागा युवक उसी क्षण अत्यन्त दुःखद अवस्था में डूब जाता है।

अब सोचिए, किसने इस दुःखद परिस्थिति का निर्माण किया? क्या दुःख कहीं कोने में छिपा हुआ उस पर आ जाने की प्रतीक्षा कर रहा था? यह दुःखदायी स्थिति, जिसने उसे पूर्णतया तोड़ कर रख दिया, पहले कहीं भी नहीं थी। युवक ने स्वयं ही इसकी सृष्टि कर ली थी। उस युवती ने इसे नहीं रचा था, वस्तुतः उसकी तो इसमें कोई भूमिका ही नहीं थी। युवक ने इससे पहले भी बहुत सी लड़कियाँ देखी होंगी, किन्तु इस लड़की-विशेष को देखते ही उसका हृदय नृत्य करने लगा था और मन एक विशेष अवस्था की ओर चल पड़ा और इसी से इन समस्त घटनाओं का क्रम प्रारम्भ हो गया। यदि वह बुद्धिमान् होता, तो स्वयं से कहता, ''इसमें क्या हुआ? यदि उसकी पहले से ही सगाई हो चुकी है, तो ठीक है।'' उसे स्वयं को फटकार लगानी चाहिए थी और परिस्थिति से समझौता करते हुए इसे विस्मृत कर देना

चाहिए। ऐसा करता तो सब-कुछ ठीक हो गया होता। क्यों? क्योंकि तब उसे ज्ञात होता कि जो हो चुका है, उस पर अश्रु बहाना मूर्खता है। पहले वह मूर्ख था, किन्तु अब अपनी त्रुटि को सुधार सकता है। यदि वह परिपक्व बुद्धि से इस समस्त घटनाक्रम का अवलोकन करे तो सभी कुछ सामान्य हो जाये। किन्तु यदि अब भी वह अपने दुर्भाग्य को ही कोसता रहेगा और स्वयं को दु:खद परिस्थिति में ही बनाये रखेगा तो कभी भी इस तथ्य को समझ नहीं सकेगा कि विपत्ति का अस्तित्व अपने मन के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं है।

इसी युवक का उपयोग हम पुन: एक बार उस तथ्य की व्याख्या करने में करें जो मैं पहले गहन निद्रा के सम्बन्ध में कह चुका हूँ। यही व्यक्ति, जो अपना पूरा-का-पूरा सायंकाल उस लड़की के विषय में सोचते हुए व्याकुलता में व्यतीत करता है, वह एक बार जब गहन निद्रा में चला जाता है तो उसकी समस्त दु:खानुभूति विलीन हो जाती है। तब वहाँ न कोई लड़की होगी, न नख-शिख तक प्रेम की व्याकुलता और न ही कोई निराशा—उस समय सब-कुछ ठीक होता है। तब वह सर्वोत्तम, प्रशान्त अवस्था में पूर्ण आराम भोगता है और उसकी शान्ति एवं आनन्द की गुणवत्ता किसी सम्राट् अथवा किसी समृद्ध करोड़पति से कम नहीं होगी। यह पूर्णतया वैसी ही होगी। क्यों? केवल इस सामान्य तथ्य के कारण कि तब उसका मन सक्रिय नहीं है। मानव की समस्त अनुभूतियों के पीछे निहित रहस्य का मर्म है कि मन को किस ढंग से शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया गया है। आपका व्यवहार इस प्रकार का हो कि आप मानो मन के हाथ की कठपुतली हैं, अथवा अपने मन के साथ आपका सम्बन्ध इस प्रकार का हो जैसे मालिक का अपने दास के साथ होता है? इसका निर्णय आप ही को करना होगा। *(समाप्त)*

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
अन्तकाल पछतायगा, जब प्राण जायेंगे छूट।।

तुम्हें ईश्वर का नाम अधिक-से-अधिक लेने की भरसक चेष्टा करनी चाहिए। नहीं तो जीवन के अन्तिम क्षणों में, जब मृत्यु तुम्हारे शिर पर मँडराती होगी और जब यह प्राण तुम्हारे शरीर से निकलने लगेंगे, तब तुम पश्चात्ताप करोगे और हाथ मलोगे।

राम नाम आराधनो तुलसी वृथा न जाय।
लरकाई को पैरिबो आगे होत सहाय।।
तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीज।
उलटा सीधा जामिहें खेत परे ते बीज।।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं—"राम के नाम की आराधना कभी बेकार नहीं जाती जैसे बचपन में किया हुआ तैरने का अभ्यास कभी भविष्य में सहायता कर सकता है।" वह कहते हैं कि 'तुम चाहे राम को प्रसन्नतापूर्वक भजो या कुपित हो कर, उसका प्रभाव अवश्य ही होगा, जैसे कि खेत में पड़ा हुआ बीज अवश्य ही फल देता है, चाहे वह ठीक से डाला गया हो और चाहे गलत तरीके से—वह अपना फल दिखाये बिना रहेगा नहीं।'

—स्वामी शिवानन्द

आध्यात्मिकता का सत्य-स्वरूप :

इच्छाओं का प्रबन्धन

(परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

अत: मन स्वयं को भाँति-भाँति से सन्तुष्ट करता है। इच्छाओं का परिशोधन करने का हमारा प्रयास सर्वदा फलीभूत नहीं होगा, क्योंकि मन को कौन वशीभूत अथवा पराजित करेगा? इसके लिए कोई चिकित्सक नहीं है। केवल मन ही अपने संघटन के आन्तरिक अनुकूलन द्वारा स्वयं ठीक कर सकता है। मन ही रोगी है तथा मन ही चिकित्सक है। इसकी कल्पना करना कुछ कठिन है। रोगी तथा चिकित्सक, दोनों एक ही किस प्रकार हो सकते हैं। परन्तु, स्थिति यही है। मन की एक विशेषता है जो उसी मन की दूसरी विशेषता, जिसे नियमित करना है, को रेगुलेटर की भाँति स्थापित कर सकता है। सामान्य भाषा में, इसे कभी-कभी उन्नत मन का निम्नतर मन को नियन्त्रित करना आदि कहा जाता है।

इच्छा न होना दर्शाने के लिए मन प्राय: इच्छा को दुर्बल दर्शाने की तकनीक/युक्ति अपनाता है जब कि परिस्थितियाँ मिलने पर अथवा अनुकूल वातावरण मिलने पर दुर्बल हुई इच्छाओं का सूक्ष्म सम्पर्क विस्तृत रूप अपना सकता है।

अन्य समय पर, इच्छाएँ सविराम रहती हैं; वे आती-जाती रहती हैं। इसे विच्छिन्न अवस्था कहते हैं, जब कि क्षीण-रूप तनु-अवस्था कहलाती है। आज आप कुछ हैं, कल आपका 'मूड' अत्यन्त प्रसन्न होता है। आपने पति-पत्नी को झगड़ते देखा है। वे आपस में बात नहीं करेंगे, परन्तु वे वास्तव में एक-दूसरे से घृणा नहीं करते। यद्यपि वे असहमति, क्रोध तथा अस्वीकारता का मूड दिखाते हैं, जैसा कि पारिवारिक सदस्यों में होता है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे एक-दूसरे से घृणा करते हैं। अन्य परिस्थितियों में उनके मोह के बन्धन अति बृहत् होते हैं, जो अन्य समय पर परिलक्षित होते हैं। यह प्रेम की सूक्ष्मता है, जो अप्रसन्नता के नीचे दब जाती है, उस समय यह प्रतीत होता है जैसे इच्छा समाप्त हो गयी है, अथवा प्रेम का अभाव है, परन्तु यह धरातल में दब जाता है। यह अनुपस्थित नहीं है, कल पुन: यह उभर आयेगा। यह सम्भव है कि आज आप अत्यन्त स्नेही हों, कल आप बिलकुल विपरीत हो सकते हैं तथा उससे अगले दिन आपका रूप कुछ और होगा।

अत:, एक व्यक्ति के लिए तनाव की विभिन्न परिस्थितियों में अलग प्रकार से व्यवहार करना सम्भव है, एक समय में कुछ, तथा बाद में कुछ और। यह मनुष्य की इच्छा की सविराम परिस्थिति है जो बाह्य परिस्थितियों के अनुरूप रूप धारण करती है—क्योंकि मन का प्रयोजन स्वयं को येन केन प्रकारेण सुरक्षित रखना है। यदि इच्छा प्रदर्शित न हो, तो मन उसे नहीं दर्शायेगा। मन उन्हीं लक्षणों को दर्शायेगा जो उस समय उसकी सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं तथा दूसरे समय पर अन्य लक्षण, वे चाहे जो भी हों, उस समय के संरक्षण एवं सुरक्षा के प्रयोजनवश दर्शायेंगे तथा जब इच्छा दर्शाने की प्रत्येक अवस्था परिपूर्ण हो जाती है, तब वह पूर्णरूपेण समक्ष आती है। उसे 'उदार अवस्था'

कहते हैं। तब, यह गरजती बाढ़ के समान आयेगी तथा हमें निगल लेगी।

प्रसुप्त, तनु, विच्छिन्न, उदार पतंजलि द्वारा उल्लिखित चार अवस्थाएँ हैं; तथा हम इनमें से किसी-न-किसी अवस्था में होते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमने इच्छाओं को वशीभूत अथवा उनका उदात्तीकरण कर लिया है—ऐसा कुछ भी नहीं है क्योंकि जो मूड दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या में दिखते हैं, वे स्वयं की सत्ता की ओर इंगित करेंगे।

फिर, क्या करना चाहिए? योगाचार्यों एवं शास्त्रों द्वारा विभिन्न विधियाँ प्रस्तावित की गयी हैं। भले ही अन्त में इच्छाओं का गर्जन हो, एक विधि सकारात्मक वातावरण में रहने की है, उदाहरणार्थ, गुरु के सान्निध्य में। आध्यात्मिक गुरु के सामीप्य में अपवित्र इच्छाओं के लिए स्वयं को प्रदर्शित करना कठिन होता है; तथा उनका निरन्तर सामीप्य—वर्षों पर्यन्त, उदाहरणार्थ—इच्छाओं के लिए स्वयं को प्रदर्शित करना इतना असम्भव हो जायेगा कि उनके पास सब आशा त्यागने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं होगा।

इतना ही नहीं, एक महान् सन्त अथवा आध्यात्मिक गुरु का सान्निध्य स्वयं में एक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। यह सूर्य के प्रकाश तथा ताप की भाँति होता है, जो समस्त संक्रामक रोगाणुओं को नष्ट करके सम्पूर्ण वातावरण को शुद्ध कर देता है। कभी-कभी हम यह अनुभव करते हैं जैसे कि एक महान् व्यक्ति की उपस्थिति में सब ठीक है। जब हम उनसे दूर होते हैं, हमें सब-कुछ अस्त-व्यस्त प्रतीत होता है; परन्तु उन महान् व्यक्तित्व की उपस्थिति में हमारे प्रश्नों का समाधान हो जाता है, भावनाएँ वश में हो जाती हैं, इच्छाएँ मूक हो जाती हैं तथा उनकी उपस्थिति में पवित्र आकांक्षाएँ प्रकाशित हो उठती हैं—जैसा कि कभी-कभी मन्दिर के अन्दर होता है। जब हम पवित्र मन्दिर में महा-आरती निहारते हैं, उस समय हमारे अन्दर पवित्र भावना जाग्रत हो उठती है। हम अपने गालों को छूते हैं, देवता के समक्ष दण्डवत् प्रणाम करते हैं तथा परम आनन्द में भजन गाते हैं। कुछ समय के लिए, जो भी लौकिक, शारीरिक, भौतिक तथा अवांछनीय है—हम सब-कुछ भूल जाते हैं।

मन्दिर में देवता अथवा आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में आध्यात्मिक भावना जाग्रत हो उठती है। जब कि यह कदाचित् सबके लिए एक अत्यन्त वांछित उपाय है, परन्तु सभी लोगों के लिए सदैव मन्दिर में मंगल-आरती देखना अथवा गुरु के सान्निध्य में रहना सम्भव नहीं है। निजी जीवन में उनकी अनेक समस्याएँ हैं। दीर्घकालीन धार्मिक अध्ययन इस हेतु सुझाया गया एक वैकल्पिक उपाय है—उदाहरणार्थ, भागवत-सप्ताह अथवा किसी मन्त्र का पुरश्चरण—जिसमें हमारा सारा समय व्यतीत हो जाता है तथा अन्य कुछ विचार करने का समय हमें नहीं मिलता। हमारी इच्छाएँ इस लम्बे समय तक अधीनस्थ होने के कारण दुर्बल हो जाती हैं तथा मन्त्र के पुरश्चरण अथवा धार्मिक अध्ययन, जिसे स्वाध्याय कहते हैं, द्वारा प्रदत्त सकारात्मक प्रभाव उन्हें उदात्त बना सकता है, उनका द्रवीकरण कर सकता है, अथवा इस सीमा तक विरल कर सकता है कि वे या तो हमारी पावन आकांक्षाओं में परिणत हो जाती हैं अथवा पूर्णतया लुप्त हो जाती हैं।

उन लोगों के लिए, जो सदा आध्यात्मिक गुरु के प्रत्यक्ष निर्देशन में नहीं रह पाते हैं, मन्त्र-पुरश्चरण अथवा दिन में कुछ मिनट नहीं, वरन् कुछ घण्टे धार्मिक अध्ययन उचित होगा, जिससे मन में उस समय उत्पन्न होने वाले विचारों का प्रभाव अन्त: में उत्पन्न होने वाली अनुपयुक्त भावनाओं पर अंकुश लगायेगा तथा उन्हें क्रमश: पवित्र करेगा, यद्यपि यह प्रक्रिया दीर्घकालीन हो सकती है। परन्तु जब अन्य कोई विकल्प न हो, तो यह करना पड़ेगा।

श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता, वाल्मीकि अथवा तुलसी रामायण जैसे उन्नत ग्रन्थ अथवा अन्य किसी ग्रन्थ का, मात्र पुस्तकालय में आकस्मिक/अनियमित अध्ययन नहीं, वरन् सतत साधना के रूप में अध्ययन भी आन्तरिक स्थितियाँ उत्पन्न करेगा जिससे इन ग्रन्थों के पावन रचयिताओं का आशीष साधक को प्राप्त होगा। जब हम श्रीमद्भागवत पढ़ते हैं, हम महान् रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास के साथ सूक्ष्म-आन्तरिक सम्पर्क स्थापित करते हैं। अन्ततः, विचार उस व्यक्तित्व से अभिन्न हैं जिन्होंने इन विचारों को परिकल्पित किया। हम किसी रूप में स्वयं व्यास के साथ संलाप कर रहे होते हैं, जब हम महाभारत अथवा श्रीमद्भागवत के सय्य सस्वर पाठ का अध्ययन करते हैं। उदाहरण के लिए, रामायण का 'सुन्दरकाण्ड' पढ़ते समय हम वाल्मीकि की उदात्त भावनाओं के साथ संलाप-रत होते हैं। 'न्यू टेस्टामेंट' (New Testament), 'सर्मन ऑन दि माउण्ट' (Sermon on the Mount) आदि पढ़ते समय हम यीशु के अद्भुत आध्यात्मिक प्रभाव के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। थॉमस कैम्पर द्वारा रचित 'The Imitation of Christ' जैसे पावन ग्रन्थ का अध्ययन करते हैं, तब हम परमात्मा के उस प्रभावशाली प्रेम के साथ एक होते हैं जिसे पावन रचयिता ने अपने हृदय में प्रतिष्ठित किया था।

अतः इन ग्रन्थों का अध्ययन मात्र आध्यात्मिक विषयों पर ज्ञान-संग्रह करने का माध्यम नहीं है, वरन् अपनी भावनाओं को उन विचारों एवं जीवन की परिस्थितियों, जिनके इन ग्रन्थों के लेखक मूर्त रूप थे, में परिणत करने की सकारात्मक प्रक्रिया है। और, जब हम किसी मन्त्र का पुरश्चरण करते हैं, तब समरूप प्रभाव परिलक्षित होता है। जिन ऋषि ने मन्त्र को प्रकाशित किया, उनका आशीर्वाद हमारे ऊपर रहता है, उस मन्त्र के देवता का आशीष हम पर रहता है तथा मन्त्र के छन्दों, जिनका हम उच्चारण कर रहे हैं, द्वारा उत्पन्न रसायनी प्रभाव का भी अत्यन्त योगदान है। ऋषि, छन्द तथा मन्त्र से सम्बद्ध होते हैं। अतः, ग्रन्थों का स्वाध्याय तथा मन्त्रों का जप यदि अविरुद्ध तथा कठोर साधना के रूप में किया जाये, तो आध्यात्मिक पथ में आने वाली सम्भव बाधाओं के लिए सुरक्षा-कवच सिद्ध होगा। ***(समाप्त)***

(भाषान्तर : मेधा सचदेव)

नाम-महिमा

ईश्वर के नाम का जप अनोखे आनन्द को जन्म देता है। इसका वर्णन करना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। भगवन्नाम हमारे अन्दर एक प्रकार की अलौकिक शक्ति भर देता है। वह हमारे स्वभाव में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर देता है। वह मनुष्य को देवताओं के समान गुणों से अलंकृत कर देता है। वह हमारे पुराने पापों, वासनाओं, संकल्पों, सन्देहों, काम-वासनाओं, मलिन चित्त-वृत्तियों तथा अनेक प्रकार के संस्कारों को नष्ट कर देता है।

ईश्वर का नाम कैसा मधुर है! उसमें कैसी अनोखी शक्ति है! वह कितनी शीघ्रता से आसुरिकता को सात्त्विकता में परिणत कर देता है। वह ईश्वर से साक्षात्कार करा देता है और साधक परमात्मैक्य का अनुभव करने लगता है। ***—स्वामी शिवानन्द***

मानव से ईश–मानव :

स्वामी शिवानन्द और पश्चिमी जगत्

(श्री एन. अनन्तनारायणन्)

(पूर्व–अंक से आगे)

आश्रम में आने वाले विदेशी पत्रकारों ने अपने–अपने देशों के समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं में गुरुदेव के विषय में विशेष लेख लिखे। जिन यात्रियों ने भारत के सम्बन्ध में पुस्तकें लिखीं, उन्होंने पर्याप्त स्थान में, और कई बार पूरे–के–पूरे अध्याय में स्वामी शिवानन्द जी और उनके आश्रम के विषय में वर्णन किया। श्री जीन हर्बर्ट ने अपनी पुस्तक, 'स्परिच्युलाइट हिन्दो' में छह बार अलग–अलग स्थानों पर स्वामी जी का उल्लेख किया तथा उन्हें 'आधुनिक भारत के महानतम आध्यात्मिक नेताओं में से एक' कहा। इस सबके कारण विश्व पर्यन्त गुरुदेव की प्रसिद्धि फैल गयी तथा आश्रम में और भी अधिक विदेशी पर्यटक आने लगे।

और इन विदेशी लोगों को शिवानन्द जी में क्या मिलता था? गुरुदेव के प्रति उनकी क्या प्रतिक्रिया थी? हिमालय के वनों में स्थित ऋषिकेश के कुटीर में आने पर उन्हें कैसा लगता था? सहस्रों मील की यात्रा करके इतना समय और धन व्यय करके आने के उपरान्त क्या उन्हें पर्याप्त एवं ठोस आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हुआ?

इज़राइल की अस्सिया ई. माल्केली ने स्वामी जी के दर्शन हेतु भारत आने की अपनी तीव्र आकांक्षित यात्रा के लिए धन जुटाने के लिए अपनी एकमात्र भू–सम्पत्ति बेच डाली। और आश्रम पहुँचते ही संयोगवश उसने एकदम अपने सामने स्वामी जी को देखा, जो कार्यालय जाने के लिए अपने कुटीर से बाहर की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। उसने वस्तुत: इसे अपने लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद माना कि आते ही उसे पार्श्व में हिमालय पर्वत, गंगा और उसके आगे से सामने आते हुए श्री स्वामी जी। उसके लिए मानो उसके जीवन के पर्दे पर उभरते हुए यह एक भव्य चित्र के समान था!

सुश्री माल्केली अपने साथ अपने मन में उठती बहुत सी शंकाओं का गट्ठर ले कर ऋषिकेश आयी थी। वह उन सबका समाधान स्वामी जी से करवाना चाहती थी। अत: वह स्वामी जी का अनुसरण करते हुए उनके पीछे–पीछे आश्रम–कार्यालय तक चली गयी। और फिर क्या हुआ? यह उस महिला ने बाद में बताया :

"वहाँ पहुँचने पर मैं उस सर्वाधिक विलक्षण शारीरिक आकार की ओर मुख करके बैठ गयी जिसके भीतर इस युग की महानतम आत्मा का निवास था। उनके एकदम सामने, उन्हें अनेकों विविध प्रकार के कार्यों में व्यस्त बैठे हुओं को निहारते हुए मुझे लगा कि मेरी आध्यात्मिक पिपासा मिटती जा रही है, बिलकुल उसी तरह का अनुभव मुझे हो रहा था जैसे मरुस्थल में भटकते हुए पिपासु व्यक्ति को शीतल जल का स्रोत मिल गया हो। मेरे समस्त सन्देहों का स्वयं ही निवारण होता जा रहा था, जैसे प्रश्न करने के लिए शब्दों की आवश्यकता ही न हो, जैसे सभी उत्तर मेरे भीतर पहले से ही निहित हों, जैसे मुझे तो केवल उन निहित उत्तरों एवं समाधानों को खोल कर बस देखना ही सीखना था।"

एल्बर्ट बॉनविन्सैस्टर एक अन्य पश्चिमी जिज्ञासु था। वह हौलैंड के ऐम्सटर्डम से था। वह अपने रक्सैक में कुछ गर्म कपड़े, एक बिस्तर, एक गीता और बाइबिल लिये हुए महीनों से हिमालय में भ्रमण कर रहा था। यह अभी तक उसकी सत्य को खोजने की निरर्थक यात्रा थी। दिन-रात उसने इतना अधिक आत्म-निरीक्षण कर लिया था मानो अब खोजने के लिए कुछ शेष रहा ही नहीं था। एक दिन तो वह लाहौल घाटी की ओर निहारते हुए एक पर्वत-शिखर पर इतना निराश हो कर बैठ गया कि हताशा में वह बिलखने लगा।

अचानक उसने शिमला से ऋषिकेश की गाड़ी पकड़ ली। यद्यपि उसने स्वामी जी के सम्बन्ध में बहुत-कुछ सुन रखा था, तथापि आश्रम में प्रवेश करते समय तक उसका मन संशयों से भरा हुआ था। १९५५ के अगस्त मास का अपराह्न था और उस समय स्वामी जी को अपने शिष्यों के साथ अल्प-सी सैर करके लौटते हुए को उसने देखा। उसके उपरान्त का वर्णन बॉनविन्सैस्टर के शब्दों में ही जानना उचित होगा :

''उनके दर्शन मात्र से मैं तत्क्षण ही अत्यधिक आनन्द से भर गया। उन्होंने भरपूर दृष्टि से मेरी ओर देखा, उन्होंने मैत्री एवं स्वागत भरे कुछेक शब्द मुझसे कहे जो यद्यपि दीर्घकालीन प्रतीक्षित कोई महान् सत्यों के सम्बन्ध में नहीं थे, तथापि उनके उन शब्दों ने मुझे जितनी प्रसन्नता दी, उतनी सम्भवतया मैंने कभी भी अनुभव न की होगी। वह थोड़े से, और सरल से शब्द थे जो दिव्य प्रेम और अनुकम्पा से भरे हुए थे। समस्त वातावरण प्रकाश से भरा हुआ, इतनी शान्ति से आपूरित था कि मैं शीघ्रता से अपने आवास-कक्ष की ओर चल पड़ा ताकि मैं उस प्रसन्नता को, उस प्रकाश को एकान्त में अनुभव कर सकूँ जो मैंने पहले कभी न देखा था और न जाना ही था। अभी तक जो-कुछ पुस्तकें मुझे स्वीकार नहीं करवा सकी थीं, वह स्वामी शिवानन्द जी की उपस्थिति मात्र ने ही कर दिया।''

पेरिस की मनोविज्ञान की मुख्य सम्पादक डा. मैरिसे चौयसी का विचार था कि सन्त जन औपचारिक और उबाऊ होते हैं और यूरोप के लोग जिस विज्ञान एवं बौद्धिक ज्ञान को इतना श्रेष्ठ मानते हैं, उसके विषय में ये लोग बिलकुल अनभिज्ञ होते हैं। किन्तु जब वह गुरुदेव से मिली तो उसे एक सुखद आश्चर्य हुआ, उसने उन्हें विनोद से भरपूर, मनोरंजन से आपूरित तथा मानवीयता से भी ओत-प्रोत पाया। गुरुदेव से उसके मिलने और आश्रम में अपने आवास के विषय में उन्होंने लिखा, ''मुझे एकदम ही आभास हो गया कि उनमें वह विद्वत्ता एवं ज्ञान विद्यमान है जिसे पाने की हम सभी में तीव्र लालसा है, भले ही हमारा जन्म-स्थान कोई भी हो...स्वामी शिवानन्द जी वह सभी कुछ जानते हैं जिनको हम पश्चिमी विश्वविद्यालयों से सीख सकते हैं, और वह सब-कुछ भी जानते हैं जो हम कहीं से भी नहीं सीख सकते। सर्वाधिक हठी भौतिकवादी को भी निश्चित रूप से उस आभामण्डल, उस आकर्षण, उस प्रशान्तता, उस पवित्रता की अनुभूति हो जायेगी, जो स्वामी जी के चतुर्दिक् प्रवाहित होती रहती है। स्वामी जी में जो मुझे सर्वाधिक प्रभावशाली, प्रशंसनीय और नूतन लगा, वह था उनका जीवन के प्रत्येक क्षण में दिव्यता को भर देना...कुछ भी हो, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सीय, दार्शनिक अथवा धार्मिक, प्रत्येक क्षेत्र में सदैव ही उनके पास कुछ-न-कुछ हमें सिखाने के लिए अवश्य होता है। मैं तो कहता हूँ कि स्वामी शिवानन्द जी वर्तमान शताब्दी के सर्वाधिक परिपूर्ण व्यक्ति हैं, जिनसे मैं मिला हूँ। सम्भवतया यह इसलिए है कि स्वामी जी के पीछे पृष्ठभूमि में प्रेम और सेवा की वह दो शक्तियाँ निहित हैं जो मीरा और तुकाराम के पीछे थीं।

(अनुवादिका : स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

शिवानन्द-ज्ञानकोष :

शिष्य

(परम पावन श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

(पूर्व-अंक से आगे)

गुरु द्वारा परीक्षा

शिष्यों के निरन्तर अनुनय-विनय करने पर और कठिन परीक्षा के उपरान्त केवल विश्वस्त अधिकारी शिष्यों को ही सद्गुरु उपनिषदों का रहस्योद्घाटन करते हैं। कभी-कभी तो गुरु शिष्य को प्रलोभन भी देते हैं; किन्तु यदि उसकी गुरु में निष्ठा होगी तो वह प्रलोभन में नहीं फँसेगा।

प्राचीन काल में ऐसी परीक्षाएँ अति कठिन होती थीं। एक बार गोरखनाथ जी ने कुछ शिष्यों को ऊँचे पेड़ पर चढ़ कर तीक्ष्ण त्रिशूल पर शिर के बल कूद जाने का आदेश दिया। अश्रद्धालु शिष्य तो मौन रह गये; किन्तु एक श्रद्धालु शिष्य तत्काल पेड़ पर विद्युत्-गति से चढ़ गया और तीव्र गति से कूद ही पड़ा। गुरु गोरखनाथ के अदृश्य अभय हस्त ने उसकी रक्षा की और उसे तुरन्त आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो गया।

एक बार गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने शिष्यों की परीक्षा ली। उन्होंने कहा—"मेरे प्रिय शिष्यो, यदि आपकी मेरे प्रति श्रद्धा-भक्ति है तो आपमें से पाँच श्रद्धालु भक्त अपना शीश मुझे चढ़ा दें, तभी आपको अपनी साधना में सफलता-सिद्धि मिल सकती है।" पाँच शिष्य अपने-अपने शिर देने को तैयार हो गये। गुरु गोविन्द सिंह जी उनको शिविर में ले गये। वहाँ उन पाँच शिष्यों के शिरों के बदले में पाँच बकरों के शिर एक-एक करके काटे—उन्हीं पाँच शिष्यों को पंच प्यारों की संज्ञा दी गयी।

गुरु शिष्यों की भिन्न-भिन्न प्रकार से परीक्षा लिया करते हैं। कई एक शिष्य गुरु की रहस्यमयी वाणी को समझ नहीं पाते और गुरु में श्रद्धा छोड़ बैठते हैं, तभी वे लाभान्वित नहीं हो पाते।

शिष्यों की चार श्रेणियाँ

प्रथम श्रेणी का सर्वोत्तम शिष्य वह है जो अत्यन्त दूरी से भी पेट्रोल की भाँति गुरु के आदेश-उपदेश-शिक्षाओं के प्रति चिंगारी की भाँति तत्क्षण प्रतिक्रिया करता है अर्थात् गुरूपदेशों का तदनुसार अनुपालन करता है।

द्वितीय श्रेणी का शिष्य कर्पूर के सदृश है, गुरु के स्पर्श होने पर ही आत्म-जाग्रति होती है तथा उसमें आध्यात्मिकता की अग्नि प्रज्वलित होती है।

तृतीय श्रेणी का शिष्य कोयले के सदृश होता है, उसकी आत्म-जाग्रति के लिए गुरु को कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

चतुर्थ श्रेणी में वह शिष्य आता है जो केले के तने के सदृश होता है। कोई भी उपाय उसको परिवर्तित नहीं कर पाता। गुरु कुछ भी प्रयत्न क्यों न करे, वह ठूँठ का ठूँठ ही रहता है। वह भाव-शून्य तथा निष्क्रिय बना रहता है।

एक सुन्दर मूर्ति बनाने के लिए दो बातें आवश्यक हैं। पहली यह कि संगमरमर पूर्णतया विशुद्ध हो। दूसरी यह कि संग-तराश अर्थात् मूर्तिकार निपुण और दक्ष हो। सुन्दर मूर्ति तराशने के लिए संगमरमर का संग-तराश के हाथ में रहना अति आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार एक आदर्श शिष्य को भी चाहिए कि वह अपने को आन्तरिक पवित्रता से सुसम्पन्न कर विशुद्ध संगमरमर की तरह अपने को निर्मल बना कर समर्थ सद्गुरु के कौशलपूर्ण पथ-प्रदर्शन में अपने को समर्पित कर दे ताकि वह उसे सुसंस्कारित कर भगवान् का प्रतिरूप अर्थात् भगवद्-स्वरूप बना सकें। ***(समाप्त)***

(अनुवादक : श्री स्वामी अर्पणानन्द जी महाराज)

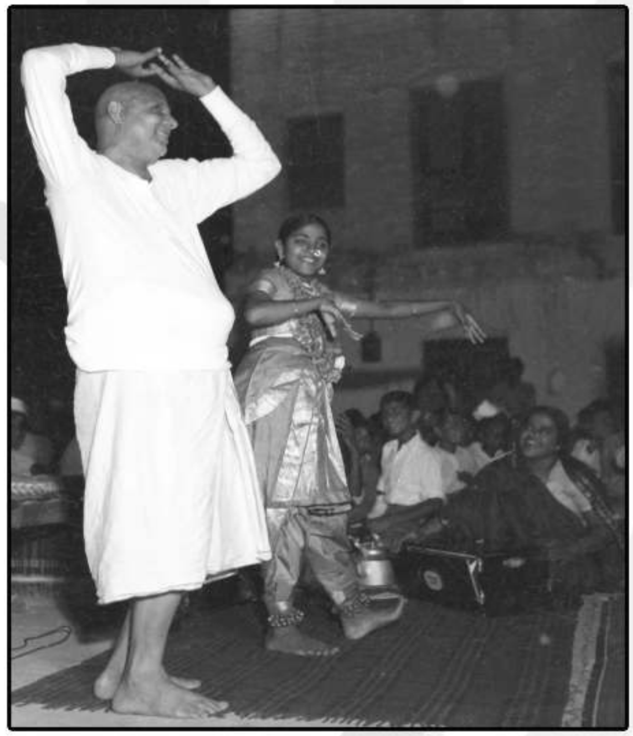

असीसी का सन्त फ्रान्सिस

ज्योति-सन्तानो!

नमस्कार! ॐ नमो नारायणाय!

सन्त फ्रान्सिस को असीसी का नगण्य निर्धन व्यक्ति कहा जाता है। उसका जन्म इटली के असीसी नगर में ११८२ ई. में हुआ था। उसके पिता का नाम बेर्नाडोन था जो असीसी का एक अत्यन्त समृद्ध व्यापारी था। उनकी माता का नाम पैका था। फ्रान्सिस एक सुदर्शन बालक था। कोमल-हृदय तथा प्रसन्न-चित्त होने के कारण उसके अनेक मित्र थे। सम्भ्रान्त तथा कुलीन व्यक्तियों के सभी पुत्र उसके सहचर थे।

फ्रान्सिस का पालन-पोषण आमोद-प्रमोद तथा विलासिता में हुआ। अमर्यादित सुखोपभोग में उसने अपनी सम्पत्ति के अधिकांश का अपव्यय कर दिया। वह स्थानीय राजकुमारों के साथ मद्यपान किया करता था।

एक दिन फ्रान्सिस अपने मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद में संलग्न था। तभी वहाँ एक भिक्षुक आ पहुँचा। कोमल-हृदय फ्रांन्सिस की जेब में जो-कुछ भी था, उसे उसने भिक्षुक को दे डाला। उसके सहचर उसकी इस दानशीलता का उपहास करने लगे। इस पर उसके मन में अनासक्ति का उदय होने लगा। उस भिक्षुक को देख कर वह सांसारिक जीवन की निरर्थकता तथा इसके दुःख-दैन्य पर सोचने को विवश हो उठा। अब वह निर्धनों को अत्यधिक धन देने लगा। उसके पिता यह सोच कर कि वह धन का अपव्यय कर रहा है, उस पर बहुत क्रोधित हुए।

कुछ दिनों के पश्चात् फ्रान्सिस किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हो कर महीनों तक रोग-शैया पर पड़ा रहा। मृत्यु उसके निकट आ चुकी थी; किन्तु ईश्वर ने उसकी प्राण-रक्षा कर दी, क्योंकि उसे एक विशेष कार्य पूर्ण करना था। अब फ्रान्सिस की प्रकृति में पूर्ण परिवर्तन हो गया। वह प्रकाश तथा मार्ग-दर्शन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, जिससे उसका भविष्य निर्मल बना रहे। उसे भगवान् ईसा की झलक दिखायी पड़ी और उसने अपनी पुरानी जीवन-पद्धति का परित्याग करके अपने जीवन को मानवता की सेवा में अर्पित करने तथा सरल-सहज जीवन व्यतीत करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

स्वस्थ होते ही फ्रान्सिस ने अपने इस दृढ़ निश्चय की सूचना अपने माता-पिता को दे दी। उनको पुत्र के इस निश्चय से निराशा हुई और वे उससे क्रुद्ध हो गये। फ्रान्सिस अपने पुराने स्वभाव का परित्याग कर ईश्वर की सेवा में तत्पर हो गया। उसने अपना धन-वस्त्रादि सारा सामान निर्धनों में वितरित कर दिया। फ्रान्सिस के प्रति उसके पिता का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने उससे पूछा, ''मेरे प्रति तुम्हारी यही कृतज्ञता है? मैंने घोर परिश्रम से प्रचुर धन अर्जित किया जिसे तुम इन तुच्छ तथा नगण्य लोगों पर लुटा रहे हो!''

फ्रान्सिस के मित्रों ने उसका उपहास किया और उसके पिता ने उसे घर से निकाल बाहर किया। फ्रान्सिस को एक भिक्षुक का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होना पड़ा। उसके पुराने मित्रों ने उस पर कीचड़ तथा पत्थर फेंके; किन्तु वह धैर्यपूर्वक सब-कुछ सहन करता रहा। वह मोटा वस्त्र धारण करने लगा तथा उसका भोजन साधारण हो गया।

फ्रान्सिस असीसी की एक पर्वतीय गुफा में दो वर्षों तक प्रार्थना तथा ध्यान में तल्लीन रहा। कभी-कभी कुछ दयालु लोग उसे भोजन दे देते थे; किन्तु उसे अधिकतर निराहार ही रहना पड़ा था।

फ्रान्सिस अपने शरीर को 'गर्दभ (गधा) भाई' कहा करता था। वह अपने इस 'गर्दभ भाई' को पूर्ण अनुशासन तथा नियन्त्रण में रखता था। कभी-कभी वह उसे अन्न-जल से भी वंचित कर देता था। अतीत में जो इसका प्रिय तथा विशिष्ट भोजन था, वह अब इसके लिए दुष्प्राप्य हो गया।

फ्रान्सिस विनम्र था। उसे ईश्वर-निर्मित सभी प्राणियों से स्नेह था। वह पशु-पक्षियों से प्रेम करता था। वह पद-दलित तथा जाति-बहिष्कृत लोगों से प्यार करता था। वह पशु-पक्षियों तथा सभी प्राणियों को भाई-बहन समझता था।

फ्रान्सिस ने गाँव-गाँव जा कर ईश्वर-प्रेम का उपदेश दिया। उसने अपने सेवा-व्रत में सम्मिलित होने के लिए इच्छुक लोगों को आमन्त्रित किया। असीसी का बर्नार्ड नामक एक समृद्ध व्यक्ति उसके साधु-स्वभाव के प्रति अत्यधिक आकर्षित हुआ। वह फ्रान्सिस का प्रथम अनुयायी था। उसने ईश्वर की वेदी पर अपनी सारी सम्पदा अर्पित कर दी। ग्यारह अन्य लोग भी फ्रान्सिस के साथ हो गये। उन्होंने सारा धन निर्धनों में वितरित कर दिया। फ्रान्सिस तथा उसके अनुयायी, लोगों को अपने उपदेश, शिक्षण तथा आशीर्वाद से लाभान्वित करते हुए समस्त इटली का भ्रमण करते थे। वे लोग रोगियों की देख-रेख भी करते थे।

फ्रान्सिस की दयालुता तथा उसके प्रेम की गाथा का प्रचार समस्त यूरोप में हो गया और अब उसे सन्त फ्रान्सिस के नाम से जाना जाने लगा। लोग उसे असीसी का नगण्य निर्धन व्यक्ति कहते थे। वह लोगों के हृदय में सदा के लिए विद्यमान हो गया।

सन्त फ्रान्सिस के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होती गयी। उसने 'आर्डर आफ मेन्डिकेन्ट फ्रायर्स (Order of Mendicant Friars) अथवा 'फ्रान्सिसकन्स' (Franciscans) नामक धर्म-संघ की स्थापना की। इस संघ के सदस्यों को निर्धनता तथा प्रेम का व्रत ग्रहण करना पड़ता है।

सन्त फ्रान्सिस का देहान्त १२२८ ई. में हुआ। सन्त फ्रान्सिस के अनुयायियों ने असीसी की पहाड़ी पर एक सुन्दर चर्च का निर्माण किया। सन्त फ्रान्सिस को यह पहाड़ी अत्यधिक प्रिय थी। सन्त फ्रान्सिस का प्रभाव तथा उनके तपोमय जीवन की पावन सुरभि अनन्त काल तक अक्षुण्ण रहेगी।

वह सन्त फ्रान्सिस महिमान्वित हो जो असीसी का निर्धन नगण्य व्यक्ति होने पर भी एक यशस्वी सन्त था!

—स्वामी शिवानन्द

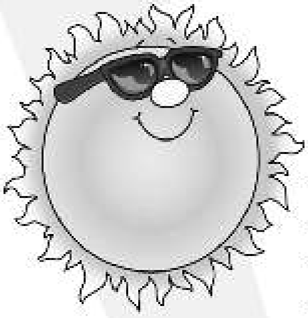

एक सरल प्रार्थना

हे प्रभु ! बनाओ मुझे अपनी **दिव्य शान्ति** का **सोपान**,
जहाँ घृणा है, वहाँ मैं **प्रेम** ले आऊँ,
जहाँ हिंसा है, वहाँ मैं क्षमा ले आऊँ;
जहाँ शंका है, वहाँ मैं **श्रद्धा-विश्वास** ले आऊँ,
जहाँ निराशा है, वहाँ मैं नवीन **आशा** ले आऊँ;
जहाँ मनमुटाव है, वहाँ मैं **सामरस्य** ले आऊँ,
जहाँ संघर्ष है, वहाँ मैं **एकता** ले आऊँ;
जहाँ अन्धकार है, वहाँ मैं **प्रकाश** ले आऊँ,
जहाँ दुःख है, वहाँ मैं **सुख** ले आऊँ।
हे प्रभु ! बनाओ मुझे अपनी दिव्य शांति का सोपान,
मैं यह नहीं चाहूँ कि मैं दूसरों से सांत्वना पाऊँ,
बल्कि मैं दूसरों को **सांत्वना** देता रहूँ;
मैं यह नहीं चाहूँ कि लोग मुझे समझें,
बल्कि मैं दूसरों को **समझने** की कोशिश करता रहूँ;
मैं यह नहीं चाहूँ कि लोग मुझे प्यार करें,
बल्कि मैं सबको **प्यार** करता रहूँ।
क्योंकि जो देता है वही **पाता** है।
दूसरों को क्षमा करने में ही, हमें प्रभु से **क्षमा-प्राप्ति** है;
क्योंकि यह छोटा अहंकार मिटने से ही मानव को **अमर जीवन** की प्राप्ति है ।

—असीसी के संत फ्रांसिस

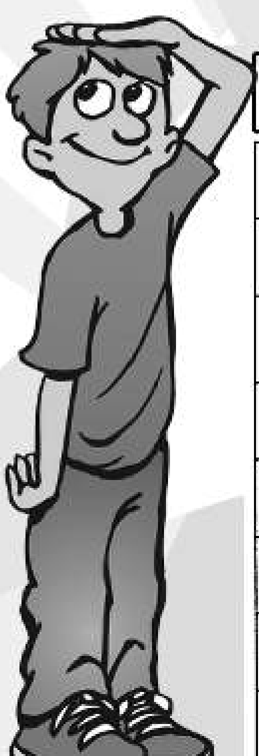

अक्षरों के इस जंगल में से ऊपर गहरे काले रंग में दिये गये शब्दों को खोजिए :-

अ	ए	पा	सां	जी	सो	दि	श्र	ए	क्ष
सा	क	श्र	द्धा	वि	श्वा	स	प्या	क	न
वि	ता	र	मा	श	अ	म	र	आ	शा
सु	ख	दि	व्य	शां	ति	झ	सां	त्व	ना
प्या	सा	प्या	क्ष	प्र	अ	ने	सो	दे	प्ति
प्रे	म	म	मा	का	द्धा	र	पा	ता	मा
ए	र	झ	प्रा	श	जी	व	न	म	स्य
मा	स्य	ने	प्ति	न	ता	श	स्य	र	ति

नाम सर्वशक्तिमान् है

संसार-सर्प से डसे गये व्यक्तियों के लिए भगवान् का नाम ही प्रबल विष-हर मन्त्र है। यह अमृत है, जिससे अमृतत्व तथा शाश्वत शान्ति की प्राप्ति होती है। जो भगवान् के नाम का जप करते हैं, उनसे यमराज भी भयभीत रहता है। वह उनके पास तक नहीं पहुँच सकता। सदा ईश्वर के नाम का जप कीजिए और अभय अवस्था प्राप्त कीजिए।

ईश्वर आपके कार्यों का पथ-प्रदर्शन करे! वह आपके पथ पर प्रकाश दे, जिससे आप जन्माधिकार, जीवन के लक्ष्य—आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त कर लें! आप सुख, शान्ति तथा सम्पन्नता में निमग्न हो कर जियें।

नियमित कीर्तन कीजिए

संकीर्तन मन अथवा आत्मा के लिए आहार है। संकीर्तन ईश्वरीय 'टॉनिक' है। संकीर्तन श्रान्त स्नायुओं के लिए परम विश्रान्तिदायक है। संकीर्तन स्वर्गिक सुधा है। ब्राह्ममुहूर्त तथा रात्रि में संकीर्तन के द्वारा इस अमृत का नित्य-प्रति पान कीजिए।

भक्ति का बल तथा उसकी गहनता आत्मार्पण और त्याग की परिपूर्णता पर निर्भर है। अधिकांश लोग गुप्त तृप्ति के लिए सूक्ष्म कामनाओं को रखे रहते हैं, यही कारण है कि वे भक्त उन्नति नहीं कर पाते। कामना तथा अहंकार—ये ही आत्मार्पण की दो बाधाएँ हैं।

—स्वामी शिवानन्द

मुख्यालय आश्रम में नवरात्रि एवं विजयादशमी उत्सव

मुख्यालय आश्रम में १० से १८ अक्तूबर २०१८ तक नवरात्रि उत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक मनाया गया। समस्त कार्यक्रमों का आयोजन मनोहारी रूप से सज्जित एवं आलोकित शिवानन्द सत्संग भवन में हुआ। माँ भगवती की उनके तीन रूपों—श्री महादुर्गा, श्री महालक्ष्मी एवं श्री महासरस्वती—में भव्य पूजा-आराधना की गयी।

प्रतिदिन कार्यक्रम का आरम्भ अतिथि भवन के एक कक्ष में चण्डी पाठ से हुआ। १० से १७ अक्तूबर तक पूर्वाह्न में आश्रम के मातृ सत्संग वर्ग एवं अन्य भक्तवृन्द द्वारा शिवानन्द सत्संग भवन में श्री ललितासहस्रनाम पाठ, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्र एवं भजन-कीर्तन द्वारा माँ पराशक्ति की आराधना की गयी।

रात्रि सत्संग के प्रथम सात दिनों में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा श्री दुर्गासप्तशती का संस्कृत में पारायण किया गया। इसके पश्चात् श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी एवं श्री स्वामी गुरुभक्तानन्द जी द्वारा श्री दुर्गासप्तशती का क्रमश: हिन्दी एवं अँगरेजी में वाचन हुआ। आठवें एवं नवें दिन, भक्तवृन्द एवं आश्रम-अन्तेवासियों द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये। इन दोनों दिनों के सत्संग का मुख्य आकर्षण तीन बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत भजन एवं शास्त्रीय नृत्य का कार्यक्रम था। कुमारी अभिलिप्सा ने भावपूर्ण भजन गायन, कुमारी अंकिता ने सुन्दर भरतनाट्यम् नृत्य तथा कुमारी यशस्विनी ने मनोहारी ओडिशी नृत्य द्वारा भक्तवृन्द के हृदयों को आनन्दित किया। नवमी के रात्रिकालीन सत्संग में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का नवरात्रि सन्देश भी पढ़ा गया। इस पावन अवसर पर दो पुस्तकों

एवं एक पुस्तिका का विमोचन हुआ। नवरात्रि के समस्त नौ दिन, सत्संग का समापन श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज द्वारा तन्त्रोक्त देवीसूक्तम् पाठ, माँ की अष्टोत्तरशतनामावली सहित अर्चना, आरती एवं विशेष प्रसाद के वितरण के साथ हुआ।

महानवमी के दिन, प्रात:काल आश्रम यज्ञशाला में विशेष चण्डी हवन सम्पन्न हुआ तथा शिवानन्द सत्संग भवन में माँ सरस्वती की अर्चना-आरती सहित विशेष पूजा सम्पन्न हुई। इसके बाद कन्या-पूजा का कार्यक्रम हुआ जिसमें परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, संन्यासी, ब्रह्मचारी, भक्त एवं अतिथिवृन्द द्वारा देवी के नौ रूपों की प्रतीक नौ कन्याओं की पूजा की गयी तथा उन्हें भोजन, वस्त्र एवं उपहार आदि अर्पित किये गये।

विजयादशमी का पावन पर्व १९ अक्तूबर को भक्तिभावपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का आरम्भ

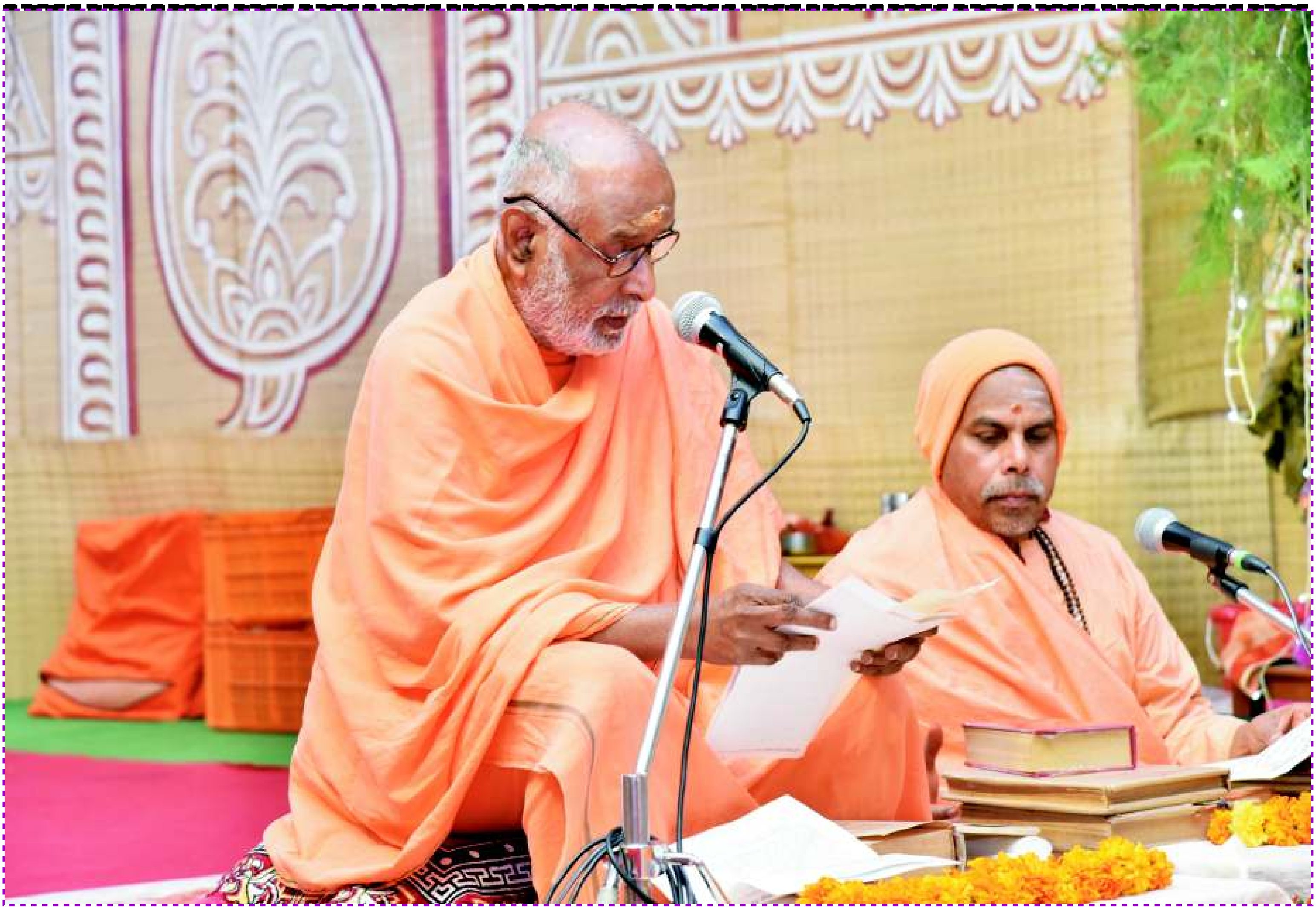

पूर्वाह्न में भजन-कीर्तन एवं माँ पराशक्ति की विशेष पूजा-आराधना के साथ हुआ। विजयादशमी सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय प्रारम्भ करने का शुभ दिवस है, अतः

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा वेद, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, श्री वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, पतंजलि योग सूत्र एवं सद्गुरुदेव की 'साधना' पुस्तक के चयनित अंशों को पढ़ा गया। इसके पश्चात्, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में विजयादशमी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए भक्तवृन्द को आध्यात्मिक जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु आसुरी सम्पदा का नाश कर दिव्य सद्गुणों का अर्जन करने की प्रेरणा दी।

सायंकाल में विश्वनाथ घाट पर माँ गंगा की

विशेष पूजा सम्पन्न हुई। रात्रि सत्संग में परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने संक्षिप्त सन्देश द्वारा भक्तवृन्द को आशीर्वादित किया। उत्सव आरती एवं विशेष प्रसाद के वितरण के साथ समाप्त हुआ।

आश्रम के अन्तेवासियों, देश-विदेश से आये अतिथि एवं भक्तवृन्द तथा स्थानीय जनों ने नवरात्रि एवं विजयादशमी उत्सव में अत्यन्त उल्लासपूर्वक भाग लिया।

माँ पराशक्ति एवं सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों। ♦ ♦ ♦

प्लेटिनम जुबली उत्सव

७५ दिवसीय अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन एवं प्रभातफेरी

भजन हॉल में सम्पन्न हो रहे अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन की प्लेटिनम जुबली के पावन अवसर के उपलक्ष्य में मुख्यालय आश्रम द्वारा २० सितम्बर २०१८ को ७५ दिवसीय महामन्त्र कीर्तन एवं प्रभातफेरी रूपी यज्ञ

आरम्भ किया गया। विभिन्न डी. एल. एस. शाखाओं के भक्तवृन्द इस दिव्य यज्ञ में अत्यन्त उल्लासपूर्वक भाग ले रहे हैं।

अक्तूबर माह में तमिलनाडु की डी. एल. एस. कुनियुर शाखा, गुजरात की डी. एल. एस. वडोदरा शाखा, ओडिशा की डी एल एस महिला शाखा, सुनाबेडा, डी. एल. एस. महिला शाखा, लांजीपल्ली, ब्रह्मपुर, डी एल एस साउथ बलाण्डा शाखा, डी एल एस सम्बलपुर शाखा, डी एल एस खमारपल्ली एवं बी. डी. पुर शाखा, डी एल एस विक्रमपुर शाखा, डी एल एस नयगाँव रोड, सालेपुर शाखा, डी एल एस बालीजोडी शाखा, डी एल एस नुआगाँव, कंधमाल शाखा, डी एल एस बालेसोर शाखा, डी एल एस बुरला शाखा तथा डी एल एस लाहंडा शाखा के भक्तों ने दैनिक प्रभातफेरी एवं अखण्ड महामन्त्र कीर्तन में भावपूर्वक सम्मिलित हो कर श्री गुरुदेव के चरण-कमलों में अपनी स्नेहिल सेवा अर्पित की।

परमपिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के आशीर्वाद सब पर हों।

मुख्यालय आश्रम में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की दिव्य कृपा से शिवानन्द मिशन (सौराष्ट्र सेन्ट्रल हॉस्पिटल) वीरनगर, गुजरात एवं डिवाइन लाइफ सोसायटी राजकोट शाखा द्वारा डी एल एस मुख्यालय आश्रम

के सहयोग से शिवानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल, शिवानन्दनगर में १८ से २९ अक्तूबर २०१८ तक एक नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह शिविर परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज की पावन स्मृति

में आयोजित किया गया था।

डी एल एस राजकोट शाखा के २० स्वयंसेवकों ने शिवानन्दनगर के समीपवर्ती पर्वतीय क्षेत्र के गाँवों में नेत्र शिविर सम्बन्धी सूचना प्रसारित करने तथा नेत्र परीक्षण शिविरों के आयोजन में अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। ये परीक्षण शिविर आश्रम से लगभग ६० किमी की

परिधि के भीतर १५ विभिन्न स्थानों पर लगाये गये तथा अन्तिम मुख्य शिविर का आयोजन आश्रम में हुआ। इन नेत्र परीक्षण शिविरों में ११५९ रोगियों के नेत्रों की जाँच की गयी तथा उनमें से ४०४ रोगियों का मोतियाबिन्दु ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। चूँकि १९ रोगी अस्वस्थता, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप

के कारण ऑपरेशन के योग्य नहीं पाये गये, शेष ३८५ रोगियों के ऑपरेशन किये गये तथा उनके नेत्रों में इन्ट्राआक्यूलर लेन्स लगाये गये। समस्त ऑपरेशन आश्रम के शिवानन्द चैरिटेबल हॉस्पिटल के ऑपरेशन

थियेटर में शिवानन्द मिशन (सौराष्ट्र सेन्ट्रल हॉस्पिटल), वीरनगर के मुख्य चिकित्सा अधिकारी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डॉ. सी. एल. वर्मा एवं उनकी डॉक्टर्स की टीम द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

ऑपरेशन के पश्चात्, रोगियों को आश्रम के ऑडिटोरियम में रखा गया तथा आवश्यक सुविधाएँ एवं चिकित्सकीय देखरेख उपलब्ध करायी गयी। श्री राजूभाई भट्ट एवं डी एल एस राजकोट शाखा द्वारा प्रदत्त

दानराशि से प्रत्येक रोगी को एक कम्बल एवं डिनर सेट वितरित किया गया।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय आश्रम शिवानन्द मिशन वीरनगर के चिकित्सकों एवं तकनीशियनों, डी एल एस राजकोट शाखा के स्वयंसेवकों तथा आश्रम हॉस्पिटल के स्टॉफ के प्रति इस शिविर को सफल बनाने में उनकी स्नेहपूर्ण एवं समर्पित सेवा हेतु हार्दिक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता है।

परमपिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव की दिव्य कृपा सब पर हो।

रोगी और दरिद्रों की सेवा करो। इससे बढ़ कर दूसरा यज्ञ नहीं है। प्रत्येक की भाव, प्रेम और श्रद्धा से सेवा करो। सबमें भगवान् की सेवा करो। अपने देश और समाज की सेवा करो। अपने माता-पिता, भाई-बहन, साधु-संन्यासी, भक्त-महात्मा, आध्यात्मिक गुरु आदि की पूर्ण हृदय से सेवा करो। रोगियों के पैर दबाओ। सोचो कि तुम ईश्वर (विराट्) का शरीर स्पर्श कर रहे हो। अनुभव करो कि तुम्हारे हाथों में हिरण्यगर्भ की शक्ति संचार कर रही है। उस मूल शक्ति-भण्डार की शरण लो।

—स्वामी शिवानन्द

९० वें बेसिक योग-वेदान्त कोर्स का समापन समारोह

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के दिव्य अनुग्रह से ९० वाँ बेसिक योग-वेदान्त कोर्स सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसके समापन समारोह का आयोजन १४ अक्तूबर २०१८ को द डिवाइन लाइफ सोसायटी, मुख्यालय आश्रम के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज की पावन उपस्थिति में किया गया।

प्रारम्भिक प्रार्थनाओं एवं कोर्स-रिपोर्ट की प्रस्तुति के पश्चात् विद्यार्थियों ने कोर्स विषयक अपने विचारों एवं अनुभवों को अभिव्यक्त किया। इसके उपरान्त विद्यार्थियों को ज्ञानप्रसाद एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये तथा प्राध्यापक वर्ग को सम्मानित किया गया।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने सन्देश में विद्यार्थियों को श्री गुरुदेव की दिव्य शिक्षाओं के अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में क्रियान्वयन तथा उनके प्रचार-प्रसार की प्रेरणा दी। समारोह माँ सरस्वती की आराधना एवं प्रसाद वितरण के साथ समाप्त हुआ।

सर्वशक्तिमान् प्रभु एवं सद्गुरुदेव की दिव्य कृपा सब पर हो।

कबीरदास कहते हैं—"अगर कोई केवल स्वप्न में ही राम-नाम कहता है, तो मैं उसके लिए अपनी खाल से उसके प्रतिदिन के प्रयोग के लिए एक जोड़ी जूते बनाना पसन्द करूँगा।" ईश्वर के पवित्र नाम की महिमा को कौन कह सकता है ! ईश्वर के पवित्र नामों का महत्त्व और प्रताप वास्तव में कौन जान सकता है! यहाँ तक कि पार्वती, जो शिव की अर्धांगिनी हैं, ईश्वर के नाम के वास्तविक गौरव और महत्त्व का ठीक-ठीक शब्दों में वर्णन करने में असफल रहीं। जो कोई उसका नाम सुनता है या स्वयं गाता है, वह अपने-आप ही बिना जाने हुए आध्यात्मिकता के शिखर पर जा पहुँचता है। वह अपनी लोक-वासना को खो बैठता है और आनन्दमग्न हो जाता है। वह अमरत्व का दिव्यामृत पान करने लगता है। वह दिव्य उन्माद में झूमने लगता है। ईश्वर के नाम का जप भक्त को भगवद्-सान्निध्य का साक्षात् अनुभव करा देता है। ईश्वर का नाम कैसा शक्तिशाली है! जो उसके नाम का जप करता है, वह असीम आनन्द और शान्ति की प्राप्ति करता है। जो उसका नाम जपता है, वह वास्तव में भाग्यवान् है; क्योंकि वह आवागमन से विमुक्त हो जायेगा।

—स्वामी शिवानन्द

शिवानन्द होम द्वारा सेवा

''शिवानन्द होम उन एकाकी एवं मरणासन्न लोगों की प्रेमपूर्ण देख-रेख का एक केन्द्र है, जो सड़क के किनारे पड़े मिलते हैं, जिनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है, जिन लोगों के रहने के लिए कोई घर नहीं है, जिनका न तो स्थायी और न ही अस्थायी रूप से कोई ठिकाना है, जो रोगग्रस्त हो जाते हैं, गुम हो जाते हैं अथवा अपने परिवार द्वारा त्याग दिये जाते हैं।'' **—परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज**

यह रोगी शिवानन्द होम में गत वर्ष भर्ती के समय से ही शय्याग्रस्त थे। ये एक वृद्ध साधु थे जो एक स्थानीय आश्रम के बाहरी भाग में रहते थे। वे मिर्गी रोग से पीड़ित थे तथा अपनी दृष्टि भी पूर्णतया खो चुके थे। उनके कूल्हे का अस्थि-भंग भी पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था की अन्य कठिनाइयों से भी कष्टपूर्ण अवस्था में थे। उनके विवरणानुसार वे १०० वर्ष के हो चुके थे।

शिवानन्द होम में उन्हें लगभग एक वर्ष तक समुचित चिकित्सकीय उपचार प्राप्त होता रहा। अत्यन्त दुर्बल स्वास्थ्य के बावजूद, उनकी स्थिति स्थिर बनी रही। अपने शरीर की आवश्यकतानुसार वे इसकी सेवा स्वीकार करते थे तथा निरन्तर भगवन्नाम का जप करते रहते थे। इस माह में एक दिन जब एक सेवक उन्हें नाश्ता खिला रहा था, उन्होंने अन्तिम श्वास ली। इस प्रकार अत्यन्त शान्तिपूर्वक उन्होंने इस धरा से प्रयाण किया।

नवरात्रि पूजा के दिनों में एक महिला रोगी का भी देहावसान हुआ। शिवानन्द होम में पाँच वर्ष पूर्व भर्ती के समय वह भी शय्याग्रस्त थीं। उन्हें त्रिवेणी घाट से होम लाया गया था। उनके शरीर का दायाँ भाग लकवाग्रस्त था। शारीरिक अक्षमता के बावजूद उनका मस्तिष्क पूर्णरूपेण सक्रिय था। वे अपने साथ रहने वाले रोगियों का ध्यान रखती थीं तथा आवश्यकता पड़ने पर अपने लिए अथवा उनके लिए तुरन्त आपातकालीन घण्टी बजा देती थीं। उस दिन उन्हें भोजन करने की इच्छा नहीं थी, फिर भी उन्होंने दो चम्मच भोजन लिया तथा इसके पश्चात् अचानक उनकी श्वास-प्रक्रिया थम गयी; उन्होंने शान्तिपूर्वक देहत्याग किया।

परमपिता परमात्मा उनकी आत्माओं को शाश्वत आनन्द एवं शान्ति प्रदान करें। ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः।

श्री गुरुदेव की कृपा से पिछले माह भर्ती एक लकवाग्रस्त रोगी की दशा में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है; वह अपने हाथों से भोजन लेने तथा बोलने में भी समर्थ हुआ है।

इस माह नये भर्ती हुए रोगियों में हरिद्वार के एक साधु भी हैं। उन्हें अज्ञात व्यक्तियों द्वारा आहत किया गया था जिससे उनके पैर की मांसपेशियों में गहरी चोट पहुँची थी और वे चलने में असमर्थ हो गये थे। मुख्यालय आश्रम पहुँचने पर उन्हें उपचार एवं आवास हेतु शिवानन्द होम भेजा गया। यहाँ कुछ दिनों के उपचार के बाद उनकी पीड़ा कम हो गयी तथा वे वॉकर की सहायता से स्वयं चलने लगे।

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः

''हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तुम्हारा ही स्मरण करें। सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें। तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो। सदा हम तुममें ही निवास करें।''

—परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन एवं श्री विश्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा के
पावन प्लेटिनम जुबली महोत्सव

के उपलक्ष्य में

'भगवन्नाम की महिमा' विषय पर

शिवानन्द सत्संग भवन में

२८ से ३० नवम्बर २०१८ तक

आध्यात्मिक सम्मेलन

प्रथम दिवस—बुधवार, २८ नवम्बर

उद्घाटन सत्र एवं सम्मेलन सत्र—१

प्रातः ०८:४५ से ०९:००	जय गणेश प्रार्थना
०९:०० से ०९:०५	दीप प्रज्वलन
०९:०५ से ०९:३०	महासचिव श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा उद्घाटन उद्बोधन
०९:३० से ११:००	चिन्मय मिशन, पुणे के श्री स्वामी सिद्धेशानन्द जी महाराज द्वारा अँगरेजी में व्याख्यान
११:०० से ११:०५	समापन प्रार्थना

सम्मेलन सत्र—२

अपराह्न ०३:३० से ४:००	जय गणेश प्रार्थना एवं भजन
०४:०० से ०५:३०	उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल जी द्वारा हिन्दी में व्याख्यान
०५:३० से ०५:३५	समापन प्रार्थना

द्वितीय दिवस—गुरुवार, २९ नवम्बर

सम्मेलन सत्र—३

प्रातः ०९:०० से ०९:३०	जय गणेश प्रार्थना एवं भजन
०९:३० से ११:००	वृन्दावन के डॉ. अच्युतलाल भट्ट जी द्वारा हिन्दी में व्याख्यान
११:०० से ११:०५	समापन प्रार्थना

सम्मेलन सत्र—४

अपराह्न ०३:३० से ०४:००	जय गणेश प्रार्थना एवं भजन
०४:०० से ०५:३०	राधा रमण मन्दिर, वृन्दावन के आचार्य श्री श्रीवत्स गोस्वामी जी द्वारा हिन्दी में व्याख्यान
०५:३० से ०५:३५	समापन प्रार्थना

तृतीय दिवस—शुक्रवार, ३० नवम्बर

सम्मेलन सत्र—५

प्रातः ०९:०० से ०९:३०	जय गणेश प्रार्थना एवं भजन
०९:३० से ११:००	रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द यूनिवर्सिटी, बेलूर मठ, हावड़ा (कोलकाता) के उपकुलपति श्री स्वामी आत्मप्रियानन्द जी महाराज द्वारा अँगरेजी में व्याख्यान
११:०० से ११:०५	समापन प्रार्थना

सम्मेलन सत्र—६

अपराह्न ०३:३० से ०४:००	जय गणेश प्रार्थना एवं भजन
०४:०० से ०५:३०	आराधना कुञ्ज, वृन्दावन के श्री स्वामी मध्वानन्द जी महाराज द्वारा हिन्दी में व्याख्यान
०५:३० से ०५:४५	श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज द्वारा आशीर्वचन एवं समापन प्रार्थना

रात्रि सत्संग में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम

२८ नवम्बर २०१८	मणिपुरी नृत्य एवं मृदंग चोलम
२९ एवं ३० नवम्बर २०१८	टेम्पल ऑफ फाइन आर्टस, सिंगापुर द्वारा भक्ति संगीत एवं नृत्य

स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी, गहम (ओडिशा) द्वारा आयोजित विद्यार्थी कल्याण कार्यक्रम

युवाओं में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास हेतु द डिवाइन लाइफ सोसायटी, स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी, गहम (ओडिशा) पिछले कुछ वर्षों से विद्यार्थी कल्याण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन कर रही है।

वर्ष २०१८ के अगस्त एवं सितम्बर माह में सोसायटी द्वारा पाँच विद्यालयों में आध्यात्मिक व्याख्यान आयोजित किये गये। वृन्दावन के श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, श्री धनञ्जय सेन जी एवं श्री नरोत्तम साहू जी ने विद्यार्थियों को प्रेरणाप्रद व्याख्यान दिये तथा उन्हें द डिवाइन लाइफ सोसायटी एवं इसकी कल्याणकारी गतिविधियों के विषय में भी बताया। कोलिअरी हाइ स्कूल, देउलाबेदा, तालचेर में २९ अगस्त को, गवर्नमेन्ट गर्ल्स हाइ स्कूल, अंगुल में १९ सितम्बर को, सरस्वती शिशु विद्यामन्दिर, अंगुल में २१ सितम्बर को, महताब हाइ स्कूल पालाहाडा में २२ सितम्बर को तथा आंचलिक गर्ल्स हाइ स्कूल, ओडास, खमार में २३ सितम्बर २०१८ को व्याख्यान आयोजित किये गये। इन पाँच विद्यालयों में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की संख्या क्रमशः ३००, २८०, ६५०, २०० एवं २०० थी। सोसायटी द्वारा प्रत्येक को दो उड़िया पुस्तकें 'दिव्य प्रेरणा' एवं 'आदर्श बालक' भी दी गयीं।

परमपिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों।

पावन स्मृति में

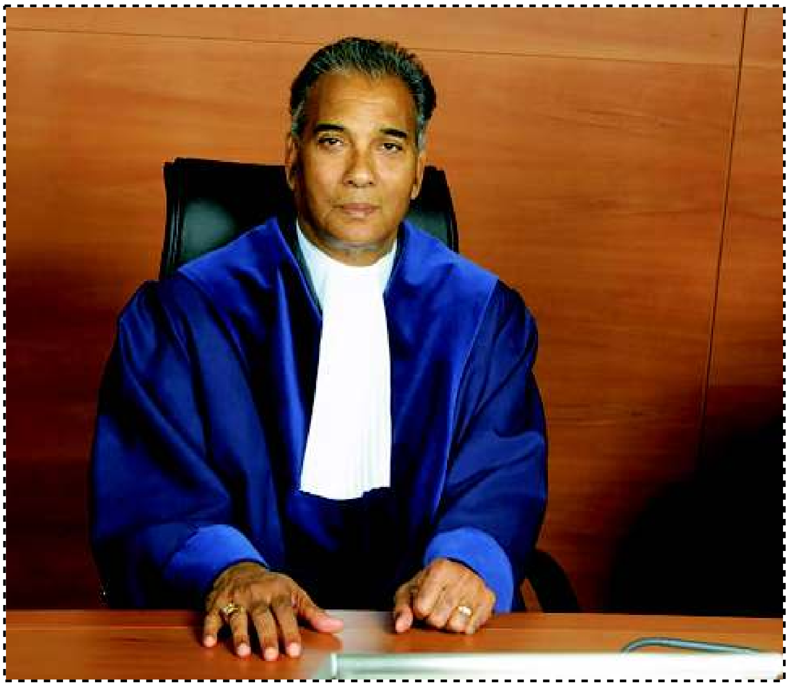

अत्यन्त दु:ख के साथ, हम द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी के भूतपूर्व न्यासी जस्टिस (डॉ.) पतिबन्दला चन्द्रशेखर राव के हैदराबाद में ११ अक्तूबर २०१८ को हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

भारतीय न्याय-व्यवस्था के उच्च पदाधिकारी, सम्माननीय श्री पी. सी. राव जी का जन्म २२ अप्रैल १९३६ को आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के वीरूलापाडु गाँव में हुआ। उन्होंने १९९६ से २०१७ तक इन्टरनेशनल ट्रिब्यूनल फॉर लॉ ऑफ द सी (International Tribunal for the Law of the Sea) हैम्बर्ग, जर्मनी में न्यायाधीश के रूप में तथा १९९९ से २००२ तक इसके अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे भारत सरकार में भी अनेक उच्च पदों पर आसीन हुए। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय कानून विषयक अनेक पुस्तकें लिखीं। डॉ. पी. सी. राव जी को सार्वजनिक क्षेत्र में योगदान हेतु २५ जनवरी २०१२ को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुस्तक 'स्टडीज इन कम्पेरेटिव फिलोसॉफी' से प्रभावित हो कर डॉ. राव उनके दर्शनार्थ १९८८ में प्रथम बार आश्रम आये। इसके पश्चात् वे नियमित रूप से आश्रम आने लगे। उन्होंने द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी के न्यासी के रूप में तथा अन्य अनेक रूपों में आश्रम को अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं। ११ अक्तूबर २०१८ को ८२ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ।

हम यही प्रार्थना करते हैं, कि उनकी आत्मा भगवान् एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के चरण-कमलों में चिर विश्रान्ति पाये।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

राम-नाम को ऐसी मधुरता और भक्ति के साथ लेना सीखना चाहिए कि जब तुम राम का नाम गाओ, तो तुम्हें सुनने के लिए वृक्ष भी अपनी पत्तियाँ तुम्हारी ओर झुका दें।

—स्वामी शिवानन्द

पावन स्मृति में

अत्यधिक शोक एवं गहन क्षति के भाव के साथ, हम आश्रम के पुरोहित श्रद्धेय श्री महादेव प्रसाद कुकरेती जी के १३ अक्तूबर २०१८ को हुए असामयिक निधन की सूचना दे रहे हैं।

श्री महादेव प्रसाद कुकरेती जी का जन्म ३ जनवरी १९४३ को उत्तराखण्ड राज्य के टिहरी जिले के मसुण गाँव में हुआ था। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त, वे वर्ष १९७५ में श्री दर्शन महाविद्यालय में साहित्याचार्य पद पर नियुक्त हुए। २००३ में सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी विद्यार्थियों के कल्याणार्थ वे महाविद्यालय को अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहे।

वर्ष १९८० में श्री कुकरेती जी को सद्गुरुदेव के पावन आश्रम में आश्रम पुरोहित के रूप में सेवाएँ अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से वे समस्त पवित्र अवसरों पर आश्रम एवं इससे सम्बद्ध भक्तों के लिए अत्यन्त कुशलतापूर्वक हवन एवं शास्त्रोक्त पूजा इत्यादि सम्पन्न करने लगे। उनकी कर्तव्यनिष्ठा, विनम्रता एवं सौम्यता, उनके सौहार्द एवं स्नेहपूर्ण स्वभाव ने उन्हें उन सबका प्रिय बना दिया जो उनके सम्पर्क में आये।

नवरात्रि के तृतीय दिवस अर्थात् १२ अक्तूबर २०१८ को श्री कुकरेती जी ने आश्रम में माँ पराशक्ति की भावपूर्वक पूजा-आराधना सम्पन्न की एवं १३ अक्तूबर प्रात:काल वे माँ के पावन चरण-कमलों में लीन हो गये।

माँ भगवती एवं सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज उनकी आत्मा को परम शान्ति प्रदान करें।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

जब तुम मन्त्रोच्चारण करते हो, तो ऐसा अनुभव करो कि ईश्वर तुम्हारे हृदय-पटल पर आसीन हैं और उनकी पवित्रता तुम्हारे चित्त की ओर प्रवाहित होती जा रही है। यह भावना भी तुम्हारे हृदय में अवतरित हो जानी चाहिए कि मन्त्र तुम्हारे अन्तःकरण को स्वच्छ करता जा रहा है, वासनाओं और दुर्विचारों का दमन करता जा रहा है।

—स्वामी शिवानन्द

द डिवाइन लाइफ सोसायटी गहम शाखा (शिवानन्द सेवाग्राम) गहम, अंगुल, ओडिशा में तृतीय अखिल ओडिशा साधना शिविर का आयोजन

परमपिता परमात्मा एवं श्रद्धेय गुरुदेव की कृपा से द डिवाइन लाइफ सोसायटी गहम शाखा (स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी) गहम, अंगुल (ओडिशा) द्वारा शिवानन्द सेवाग्राम, गहम, तालचेर, जिला अंगुल में ११ से १४ जनवरी २०१९ तक अखिल ओडिशा साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ संन्यासी तथा अन्य सुविख्यात विद्वज्जन अपनी उपस्थिति से शिविर की शोभा-वृद्धि करेंगे। ओडिशा की समस्त डी. एल. एस. शाखाएँ एवं भक्तवृन्द साधना शिविर में भाग लेने हेतु सादर आमन्त्रित हैं।

प्रतिभागिता शुल्क : ₹ ५००/-

पंजीकरण की अन्तिम तिथि : ३१ दिसम्बर २०१८

कृपया धनराशि चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के माध्यम से 'दिव्य जीवन संघ, स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी' के नाम भेजें।

सम्पर्क सूत्र :
१. श्री धनञ्जय सेन ९१ ७३८११ ४१००६
२. श्री अक्षय कुमार दाश ९१ ९४३७० ४३२२५

सम्पर्क स्थान/सम्पर्क हेतु पता :
दिव्य जीवन संघ
स्वामी शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी
पी. ओ. गहम, जिला अंगुल, ओडिशा—७५९१००

केवल नाम-स्मरण ही सारी तकलीफों और कठिनाइयों से मुक्त है। भगवन्नाम का जप सबसे सरल है और सुखद भी है। इसीलिए इसे मोक्ष के सभी साधनों में श्रेष्ठ बताया गया है।

—स्वामी शिवानन्द

सूचना

आठवाँ छत्तीसगढ़ राज्य डिवाइन लाइफ सोसायटी आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के अनुग्रह से द डिवाइन लाइफ सोसायटी, नन्दिनीनगर शाखा द्वारा नन्दिनीनगर में १७ से १९ जनवरी २०१९ तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन तथा २० से २२ जनवरी तक १४ से २५ वर्ष तक के विद्यार्थियों एवं युवाओं हेतु एक युवा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ संन्यासी तथा अन्य संस्थाओं के सन्त एवं विद्वज्जन सम्मेलन तथा शिविर को अपनी उपस्थिति एवं प्रवचनों से आशीर्वादित करेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार एवं विद्यार्थियों और युवाओं के व्यक्तित्व विकास हेतु आयोजित इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त शाखाओं के भक्तवृन्द एवं छत्तीसगढ़ राज्य के युवा एवं विद्यार्थीवृन्द हार्दिक रूप से आमन्त्रित हैं।

युवा शिविर हेतु कोई पंजीकरण शुल्क नहीं है।

आध्यात्मिक सम्मेलन के लिए प्रतिभागिता शुल्क ₹ ५००/- है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता :

श्री के. एस. ठाकुर,
वार्ड नं. १३, स्वामी शिवानन्द आश्रम के पास,
नन्दिनीनगर
जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़
पिन कोड—४९००३६

पंजीकरण एवं सूचना हेतु कृपया सम्पर्क करें :

१. श्री स्वामी विशुद्धानन्द	०६२६४०९६५४४
२. श्री के. एस. ठाकुर	०८७७०७५८१३७/०८१०३६६०६५७
३. श्री कान्तिभाई पटेल	०८३७००७४८५५
४. श्री नारद प्रसाद वर्मा	०९६३०१४४०४०

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पश्चिम बंगाल द्वारा साधना शिविर का आयोजन

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पश्चिम बंगाल के वार्षिक साधना शिविर का आयोजन १४ फरवरी २०१९ सायंकाल से १८ फरवरी २०१९ पूर्वाह्न तक मानव सेवा ट्रस्ट कॉम्प्लेक्स, हमीरगाछी, रेलवे स्टेशन मालिया (हावड़ा–तारकेश्वर रेल लाइन पर स्थित) में किया जा रहा है। यह स्थान कोलकाता से सड़क मार्ग द्वारा ५४ किमी दूरी पर है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे १४ फरवरी २०१९ को अपराह्न ३ बजे से ४ बजे के मध्य साधना शिविर स्थल पर रिपोर्ट करें। पंजीकरण के समय उन्हें नामांकन हेतु फार्म दिया जायेगा।

पश्चिम बंगाल के प्रतिभागियों के लिए प्रतिभागिता शुल्क ₹ ४५०/– प्रति व्यक्ति है तथा अन्य राज्यों के प्रतिभागियों के लिए शुल्क ३५०/– रुपये प्रति व्यक्ति है। इसमें भोजन तथा ४ रात्रि डॉर्मिटरी में आवास का व्यय सम्मिलित है।

नामांकन की अन्तिम तिथि ३१ जनवरी २०१९ है। नामांकन फार्म श्री बिजोय स्वाँई, ४ C मेहर अली मोंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाता—७०००७२, पश्चिम बंगाल को भेजें।

नामांकन एवं अन्य जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें :

श्री बिजोय कुमार स्वाँई	० ९३३९३ ९२८४५
श्री नितुल पारेख	० ९८३०० ४०७३०
श्री प्रफुल्ल कुमार महापात्रा	० ९४३८३ ०३६२४

समस्त भक्तवृन्द से शिविर में सम्मिलित होने के लिए हार्दिक अनुरोध है।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

---

४५ वाँ अखिल आन्ध्र डिवाइन लाइफ सोसायटी आध्यात्मिक सम्मेलन

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के अनुग्रह से ४५ वें अखिल आन्ध्र डिवाइन लाइफ सोसायटी आध्यात्मिक सम्मेलन का २४ से २६ जनवरी २०१९ तक राजीव प्लेग्राउण्ड, पुराने बस स्टैण्ड के समीप, विजयनगरम् में आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ संन्यासी तथा अन्य संस्थाओं के सन्त एवं विद्वज्जन सम्मेलन को अपनी उपस्थिति एवं प्रवचनों से आशीर्वादित करेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार हेतु आयोजित इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु डिवाइन लाइफ सोसायटी की समस्त शाखाओं के भक्तवृन्द हार्दिक रूप से आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन हेतु प्रतिभागिता शुल्क ₹ २००/– प्रति व्यक्ति है। इसमें भोजन एवं आवास व्यवस्था का व्यय सम्मिलित है।

नामांकन तथा अन्य जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें :

१. श्री चिल्ला रामकृष्ण, डी एल एस शाखा, विजयनगरम्	० ९४४०५ ६४७३५
२. श्री टी. चन्द्रमौलिश्वर राव	० ९६१८२ ८३७८९
३. डॉ. श्री एन. नागेश्वर राव	० ९४४०३ ८७६५९

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

महत्त्वपूर्ण सूचना

योग-वेदान्त अरण्य अकादमी (द डिवाइन लाइफ सोसायटी)

शिवानन्दनगर—२४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

प्रवेश-सम्बन्धी सूचना

लगभग दो माह **१-३-२०१९ से २९-४-२०१९** तक के **९१ वें** आवासीय बेसिक योग-वेदान्त पाठ्यक्रम (कोर्स) में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। यह पाठ्यक्रम द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, शिवानन्दनगर (ऋषिकेश) के अकादमी-परिसर में आयोजित किया जायेगा।

इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विस्तृत विवरण इस प्रकार है :

१. इस पाठ्यक्रम में केवल भारतीय (पुरुष) नागरिक भाग ले सकते है। कक्षाएँ कोर्स के लिए विद्यार्थियों के रूप में पंजीकृत प्रविष्ट आवेदनकर्ताओं के लिए संचालित की जायेंगी।

२. आयु-वर्ग—२० और ६५ वर्ष के बीच

३. योग्यताएँ :
   (क) गहन आध्यात्मिक अभीप्सा तथा योग-वेदान्त के अभ्यास में गहन रुचि रखने वाले स्नातक उपाधिधारी पुरुषों को वरीयता दी जायेगी।
   (ख) अँगरेजी भाषा में धाराप्रवाह वार्तालाप करने की क्षमता होनी चाहिए; क्योंकि शिक्षण का माध्यम अँगरेजी भाषा है।
   (ग) स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए।

४. पाठ्यक्रम की अवधि—योग, वेदान्त तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर लगभग दो माह की अवधि का आवासीय पाठ्यक्रम।

५. पाठ्यक्रम का विषय-क्षेत्र तथा पाठ्यचर्या (Syllabus) :
   (क) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन के इतिहास का रूपरेखीय अध्ययन, उपनिषदों का अध्ययन, धार्मिक चेतना का परिशीलन, भगवद्गीता का अध्ययन, पतंजलि की योग-प्रणाली, नारद-भक्ति-सूत्र तथा स्वामी शिवानन्द का दर्शन।
   (ख) व्यावहारिक—आसन, प्राणायाम, ध्यान, कर्मयोग, भाषण, समूहों में चर्चा, प्रश्न-उत्तर और अन्तिम परीक्षा।
   (ग) वैकल्पिक विषय के रूप में प्रारम्भिक संस्कृत के शिक्षण का भी प्रावधान है। जो प्रतिभागी इसमें रुचि रखते हों, वे इस संस्कृत-कक्षा से भी लाभ उठा सकते हैं।

६. प्रशिक्षण, आवास तथा भोजन के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की ओर से शुद्ध शाकाहारी भोजन (जलपान तथा दो बार भोजन प्रतिदिन) उपलब्ध कराया जायेगा। धूम्रपान, मद्यपान तथा नशीले पदार्थों का सेवन सर्वथा वर्जित है।

७. भरे हुए आवेदन-पत्र अधोलिखित पदाधिकारी के पास **१५-१-२०१९** तक पहुँच जाने चाहिए।

८. योग-वेदान्त अरण्य अकादमी का उद्देश्य विद्यार्थियों को शैक्षिक-सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें इस योग्य भी बनाना है कि वे अपने व्यक्तित्व को पूर्ण तथा संघटित बना सकें तथा हितकारी एवं सफल जीवन व्यतीत कर सकें। अकादमी में संचालित किये जाने वाले पाठ्यक्रम का स्वरूप छात्र को केवल शास्त्रीय ज्ञान अथवा मूलपाठ-विषयक जानकारी प्रदान करने की अपेक्षा अनुशासनात्मक अधिक है।

आवेदन-पत्र तथा विवरण-पत्रिका प्राप्त करने के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें :

आवेदन-पत्र तथा विवरण-पत्रिका को वेबसाइट से भी डाउनलोड किया जा सकता है।
www.sivanandaonline.org
Or contact the e-mail:
yvfacademy@gmail.com

शिवानन्दनगर
अक्तूबर, २०१८

कुल-सचिव (रजिस्ट्रार)
योग-वेदान्त अरण्य अकादमी
द डिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : शिवानन्दनगर—२४९ १९२
जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड
फोन : ०१३५-२४३३५४१ (अकादमी)

नोट— (१) चयनित विद्यार्थियों को अकेले आना चाहिए—पारिवारिक सदस्यों अथवा सम्बन्धियों के साथ नहीं। (२) आवश्यकता पड़ने पर क्रमसंख्या ५ के अन्तर्गत उपर्युक्त पाठ्यचर्या में बिना किसी पूर्व-सूचना के किंचित् परिवर्तन किया जा सकता है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क* रु. १५०/-

प्रवेश-शुल्क . . . . रु. ५०/-

सदस्यता-शुल्क . . . . रु. १००/-

२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक) रु. १००/-

३. नयी शाखा खोलने का शुल्क** रु. १०००/-

प्रवेश-शुल्क . . . . रु. ५००/-

सम्बद्धता-शुल्क . . . . .रु. ५००/-

४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) रु. ५००/-

* सदस्यता के इच्छुक प्रार्थी कृपया प्रार्थना-पत्र के साथ अपना फोटो पहचान-पत्र (Photo Identity) तथा निवास-स्थान के प्रमाण-स्वरूप कोई दस्तावेज (Residential Proof) भेजें।

** नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

आश्रम को धन भेजने सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्देश

कृपया धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा **"The Divine Life Society" Shivanandanagar, Uttarakhand** के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक 'ऋषिकेश' में देय होना चाहिए।

इलेक्ट्रानिक मनी आर्डर के माध्यम से धन भेजते समय कृपया एक पत्र में इलेक्ट्रानिक मनी आर्डर नम्बर (EMO), भेजने की तारीख तथा उद्देश्य लिख कर भेजें।

व्यवस्थागत तथा लेखागत कारणों से, हमारे बैंक एकाउन्ट में बिना पूर्व अनुमति के सीधी भेजी गयी धनराशि सोसायटी द्वारा स्वीकार नहीं की जाती है।

डी एल एस शाखाओं के प्रतिवेदन

भारतीय शाखाएँ

बंलागीर (ओडिशा): दैनिक पादुका पूजा, योग-कक्षाएँ, सायंकालीन सत्संग, प्रत्येक गुरुवार और शनिवार को साप्ताहिक सत्संग तथा एकादशी को श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ नियमित रूप से चलते रहे। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस भजन-कीर्तन, पादुका पूजा एवं श्री गुरुदेव के जीवन तथा शिक्षाओं पर प्रवचन सहित मनाया गया। चिदानन्द स्वास्थ्य केन्द्र के माध्यम से अगस्त माह में २३७ निर्धन रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा तथा औषधियाँ उपलब्ध करायी गयीं।

बंगलूरु (कर्नाटक): ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, भजन-कीर्तन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित मनायी गयीं। २२ सितम्बर को कुष्ठरोगियों में फल, वस्त्र एवं अन्य सामग्री वितरित की गयी। प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा, स्वाध्याय, श्रीमद्भगवद्गीता एवं गुरु गीता पाठ सहित सत्संग यथावत् चलता रहा। माह के तीसरे रविवार को अखण्ड महामन्त्र कीर्तन, दूसरे एवं चौथे रविवार को भजन गायन, श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् पाठ हेतु प्रशिक्षण कक्षाएँ आयोजित की गयीं। २३ को भजन-कीर्तन सहित विशेष सत्संग का आयोजन किया गया।

बरबिल (ओडिशा): शाखा द्वारा अगस्त-सितम्बर माह में प्रत्येक गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रत्येक सोमवार को चल सत्संग किये गये। शिवानन्द धर्मार्थ डिस्पेंसरी द्वारा निर्धन रोगियों की नि:शुल्क होमियोपैथी सेवा पूर्ववत् चलती रही। प्रत्येक २४ को साधना दिवस आयोजित किया गया। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी मनायी गयी। २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, नगर संकीर्तन, नारायण सेवा तथा निर्धनों में वस्त्र-वितरण सहित मनायी गयी। २२ से २४ सितम्बर तक विशेष सत्संग आयोजित किये गये।

बरगढ़ (ओडिशा): शाखा के दैनिक स्वाध्याय, प्राणायाम और ध्यान, प्रत्येक सोमवार को रुद्राभिषेक, गुरुवार को पादुका पूजा, प्रत्येक शनिवार को साप्ताहिक सत्संग, रविवार को श्रीमद्भगवद्गीता पाठ तथा विचारगोष्ठी के कार्यक्रम पूर्ववत् चलते रहे। 'महत् वाणी' उड़िया पत्रिका नि:शुल्क वितरणार्थ छापी गयी तथा निर्धन रोगियों को नि:शुल्क होमियोपैथी चिकित्सा उपलब्ध करायी गयी। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी मनायी गयी तथा ३ सितम्बर को उडिया पुस्तक 'श्रीमद्भगवद्गीता' का विमोचन किया गया। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, भजन-कीर्तन एवं प्रवचन सहित मनायी गयीं। इनका समापन अन्न दान एवं वस्त्र दान के साथ हुआ। इसके अतिरिक्त, १७ से २३ सितम्बर तक श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया।

ब्रह्मपुर (ओडिशा): प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग, गुरुवार तथा ८ एवं २४ को पादुका पूजा, संक्रान्ति को सुन्दरकाण्ड पाठ तथा एकादशी को श्रीमद्भगवद्गीता पाठ पूर्ववत् चलते रहे। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती प्रभातफेरी, पादुका पूजा एवं श्री

विष्णुसहस्रनाम पाठ सहित मनायी गयीं। इनका समापन नारायण सेवा के साथ हुआ। १६ सितम्बर को १०८ सुन्दरकाण्ड पाठ किये गये।

भुवनेश्वर (ओडिशा): दैनिक पादुका पूजा, प्रत्येक गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, मंगलवार को योग कक्षा एवं भजन सन्ध्या, २४ को श्री रामनाम जप तथा श्रीमद्भागवत पारायण यथावत् चलते रहे। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस नगर संकीर्तन, पादुका पूजा, हवन, श्रीमद्भगवद्गीता पाठ एवं प्रवचन सहित मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती मनायी गयीं। इनका समापन नारायण सेवा के साथ हुआ। शाखा द्वारा विद्यार्थियों के लिए एक भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी ।

बोमकोई (ओडिशा): अगस्त माह में रविवार को साप्ताहिक सत्संग, माह के दूसरे गुरुवार को स्वाध्याय सहित चल सत्संग तथा ८ एवं २४ को पादुका पूजा यथावत् चलते रहे। संक्रान्ति को श्री हनुमान चालीसा पाठ तथा एकादशी को श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ किया गया । ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस भावपूर्वक मनाया गया।

चाँदपुर (ओडिशा): प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा और शनिवार को साप्ताहिक सत्संग यथावत् चलते रहे। सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के मासिक जयन्ती दिवस ८ एवं २४ को चल सत्संग आयोजित किये गये। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी अभिषेक, अर्चना एवं 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' जप सहित मनायी गयी। ४ सितम्बर को नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ३० रोगियों का उपचार तथा १४ रोगियों का आपरेशन किया गया। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस प्रभातफेरी एवं पादुका पूजा सहित मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, प्रवचन एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयीं। इनका समापन नारायण सेवा एवं वस्त्र दान के साथ हुआ।

छत्रपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा एवं श्रीमद्भागवत पारायण तथा प्रत्येक गुरुवार को नियमित सत्संग किये जाते रहे। सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के मासिक जयन्ती दिवस ८ एवं २४ को पादुका पूजा और अर्चना सम्पन्न हुई। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस नगर कीर्तन, पादुका पूजा एवं श्रीमद्भगवद्गीता पाठ सहित मनाया गया। इस अवसर पर एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें १५५ निर्धन रोगियों की सेवा की गयी। १७ को श्री तुलसीदास जयन्ती मनायी गयी तथा २५ को सुन्दरकाण्ड पाठ किया गया ।

कटक (ओडिशा): ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ५५ वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस नगर-कीर्तन, पादुका पूजा एवं श्री गुरुदेव के जीवन तथा शिक्षाओं पर प्रवचन सहित मनाया गया। १५ अगस्त को शाखा का वार्षिक दिवस मनाया गया।

दलभानपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा अगस्त-सितम्बर माह में दैनिक योग कक्षा तथा प्रत्येक मंगलवार को श्रीमद्भगवद्गीता पाठ, श्री हनुमान चालीसा पाठ एवं भजन-कीर्तन सहित साप्ताहिक सत्संग यथावत् चलते रहे। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ५५ वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस तथा ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि

आराधना दिवस नगर-कीर्तन, पादुका पूजा एवं श्रीमद्भगवद्गीता पाठ सहित मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती मनायी गयीं। २६ अगस्त एवं २७ सितम्बर को चल सत्संग आयोजित किये गये ।

धनञ्जयनगर (ओडिशा): ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस मनाया गया। २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा एवं रोगियों तथा विद्यार्थियों में फल-बिस्कुट वितरण सहित मनायी गयी।

गहम, अंगुल (ओडिशा): सितम्बर माह में श्री स्वामी चिदानन्द सेन्टीनरी चैरिटेबल डिस्पेंसरी द्वारा ७८९ निर्धन रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध करायी गयी ।

गाँधीनगर (गुजरात): दैनिक योग कक्षा तथा प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग यथावत् चलते रहे। निर्धन रोगियों को आर्थिक सहायता एवं औषधियाँ उपलब्ध करायी गयीं तथा विद्यार्थियों में पुस्तकें एवं लेखन-पुस्तिकाएँ ज्ञानप्रसाद के रूप में वितरित की गयीं।

जमशेदपुर (झारखण्ड): शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रत्येक रविवार को अन्त्योदय बस्ती के निर्धन बालकों के लिए नि:शुल्क चित्रकारी एवं योग कक्षाएँ आयोजित की जाती रहीं। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ५५ वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस पादुका पूजा सहित मनाया गया। इसके अतिरिक्त, मेहरबाई टाटा मेमोरियल हास्पिटल में विशेष प्रार्थना सत्र का आयोजन किया गया।

जयपुर (ओडिशा): दैनिक पूजा तथा गुरुवार एवं रविवार को साप्ताहिक सत्संग यथावत् चलते रहे। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का ५५ वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस तथा ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस प्रार्थना, पादुका पूजा एवं श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ सहित मनाया गया। २७ अगस्त को विशेष सत्संग तथा २८ जुलाई से ४ सितम्बर तक ईशावास्योपनिषद् पर प्रवचन आयोजित किये गये। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी, ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती मनायी गयीं। कोरापुट जिले की धर्मार्थ होमियोपैथी डिस्पेंसरी द्वारा रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध करायी गयी ।

कबिसूर्यनगर (ओडिशा): दैनिक नारायण सेवा तथा गुरुवार एवं रविवार को साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चलते रहे। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती प्रभातफेरी, पादुका पूजा एवं श्री गुरुदेव के जीवन तथा शिक्षाओं पर वीडियो शो सहित मनायी गयीं। २५ से २९ सितम्बर तक 'तत्त्वबोध' एवं 'श्रीमद्भागवत महापुराण' पर प्रवचन आयोजित किये गये।

काकिनाडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा प्रत्येक सोमवार को भजन, बुधवार, रविवार और शुक्रवार को ध्यान, भजन, पारायण और प्रवचन सहित सत्संग तथा रविवार को विद्यार्थियों के लिए किशोर भारती एवं निर्धनों के लिए नारायण सेवा के कार्यक्रम नियमित रूप से चलते रहे।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): प्रतिदिन महामृत्युञ्जय मन्त्र, शिवसहस्रनामावली एवं श्रीदुर्गासप्तशती पाठ नियमित रूप से

चलता रहा। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयीं। ३० सितम्बर को मासिक सत्संग आयोजित किया गया।

लाँजीपल्ली महिला शाखा (ओडिशा): अगस्त-सितम्बर माह में दैनिक पूजा, प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग एवं गुरुवार को पादुका पूजा तथा चल सत्संग, एकादशी को श्रीमद्भागवत और श्रीमद्भगवद्गीता पाठ, संक्रान्ति को हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड पाठ तथा माह के तीसरे रविवार को नारायण सेवा पूर्ववत् चलते रहे। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस नगर-कीर्तन, पादुका पूजा एवं अनाथ बालकों को भोजन वितरण सहित मनाया गया। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती मनायी गयीं। इन अवसरों पर रोगियों तथा बालकों में फल-बिस्कुट वितरित किये गये।

लाँजीपल्ली (ओडिशा): दैनिक पूजा एवं महामन्त्र संकीर्तन तथा प्रत्येक रविवार को नारायण सेवा सहित साप्ताहिक सत्संग पूर्ववत् चलते रहे। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

लखनऊ (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती प्रार्थना, मन्त्र जप, पादुका पूजा एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयीं।

मैसूर महिला शाखा (कर्नाटक): ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। शाखा द्वारा १० एवं ११ जुलाई को 'शरणागति तत्त्व', १२ से १७ जुलाई तक 'सुन्दरकाण्ड' तथा ५ से ११ सितम्बर तक 'गणेश पूजा एवं विधि' पर विशेष प्रवचन आयोजित किये गये। दैनिक प्रार्थना, पादुका पूजा एवं भजन नियमित रूप से चलते रहे।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक योग कक्षा एवं सत्संग, प्रत्येक गुरुवार को चल सत्संग, शनिवार को श्री हनुमान चालीसा पाठ एवं सुन्दरकाण्ड पाठ सहित मातृ सत्संग किये जाते रहे। ३ अगस्त को महामन्त्र कीर्तन किया गया। ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस पादुका पूजा एवं 'श्रीरामचरितमानस' पर प्रवचन सहित मनाया गया। २५ अगस्त को श्री तुलसीदास जयन्ती मनायी गयी ।

पंचकुला (हरियाणा): योगवासिष्ठ एवं रामायण से दैनिक स्वाध्याय नियमित रूप से चलता रहा। भक्तों के आवास पर प्रार्थना, स्वाध्याय एवं विश्व-शान्ति हेतु महामन्त्र कीर्तन सहित सत्संग आयोजित किये गये। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती भजन-कीर्तन सहित मनायी गयीं। इन अवसरों पर नारायण सेवा की गयी तथा बालकों और रोगियों में दूध एवं अल्पाहार वितरित किया गया।

पुरी (ओडिशा): शाखा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा सहित सत्संग तथा प्रत्येक एकादशी को श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण एवं श्रीमद्भगवद्गीता पाठ यथावत् चलते रहे। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस, ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, महामन्त्र कीर्तन एवं महामृत्युञ्जय मंत्र जप सहित मनाये गये।

राजोल (आन्ध्र प्रदेश): प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चलता रहा। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयीं। इन अवसरों पर बालकों तथा भक्तों में मिठाई, चाकलेट एवं पुस्तिकाएँ वितरित किये गये।

रायपुर (छत्तीसगढ़): प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा एकादशी को श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ नियमित रूप से चलता रहा। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव का १३१ वाँ जन्मदिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

राजकोट (गुजरात): शाखा द्वारा अप्रैल से सितम्बर माह तक प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को प्रार्थना, श्रीमद्भगवद्गीता पाठ, सुन्दरकाण्ड पारायण, उपनिषद् गंगा वीडियो कार्यक्रम तथा 'कर्म के सिद्धान्त' विषय पर प्रवचन सहित सत्संग नियमित चलते रहे। सत्यनारायण कथा, भजन एवं श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण सहित आधे दिन का शिविर आयोजित किया गया। नेत्र, दन्त और होमियोपैथी चिकित्सा इत्यादि के नि:शुल्क शिविर भी आयोजित किये गये, जिनके द्वारा निर्धन रोगियों को पर्याप्त सेवा की गयी। १५ नेत्र शिविरों में १६८९ रोगियों का परीक्षण तथा ३६५ का आपरेशन किया गया। दन्त चिकित्सा शिविर में १०३ रोगियों का उपचार किया गया। निर्धन बालकों के लिए नि:शुल्क शिक्षण कक्षाएँ, पुस्तकों एवं लेखन-पुस्तिकाओं का वितरण, योग कक्षाएँ तथा दान सेवा इत्यादि के कार्यक्रम यथावत् चलते रहे। महिलाओं के लिए नि:शुल्क योग कक्षाएँ नियमित चलती रहीं। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा सहित मनायी गयीं।

राउरकेला (ओडिशा): दैनिक योग कक्षा, प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा, अभिषेक-अर्चना सहित साप्ताहिक सत्संग तथा रविवार को चल सत्संग नियमित चलते रहे। रोगियों का नि:शुल्क उपचार किया गया । परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस, ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती श्रद्धापूर्वक मनाये गये।

सम्बलपुर (ओडिशा): दैनिक पूजा, प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक सत्संग, सोमवार को नारायण सेवा, द्वितीय शनिवार को सुन्दरकाण्ड पाठ, ८ और २४ को पादुका पूजा आदि नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। होमियोपैथी डिस्पेंसरी द्वारा रोगियों की औषधियों सहित निःशुल्क सेवा की जाती रही। ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती पादुका पूजा, भजन-कीर्तन एवं श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण सहित मनायी गयीं। इनका समापन नारायण सेवा के साथ हुआ। २७ सितम्बर को विशेष सत्संग आयोजित किया गया तथा फल एवं 'अमृतवाणी' पुस्तिका वितरित किये गये ।

साउथ बलांडा (ओडिशा): दैनिक पूजा, प्रत्येक शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, ८ को पादुका पूजा आदि नियमित गतिविधियाँ चलती रहीं। २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस श्रद्धापूर्वक मनाये गये। ३ से ६ सितम्बर तक 'श्रीमद्भागवत महापुराण' पर प्रवचन आयोजित किये गये। १७ सितम्बर को विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती नगर

संकीर्तन, पादुका पूजा, प्रवचन एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयी। २९ सितम्बर को विश्व-शान्ति एवं विश्व-बन्धुत्व हेतु अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन किया गया ।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): दैनिक योग कक्षा, पादुका पूजा, श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ, स्वाध्याय सहित मातृ सत्संग, प्रत्येक शनिवार और रविवार को सुन्दरकाण्ड पाठ तथा एकादशी को महामन्त्र संकीर्तन नियमित रूप से चलते रहे। १२ अगस्त से ९ सितम्बर तक श्री रामचरितमानस का पारायण किया गया ।

विशाखपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा द्वारा श्री विष्णुसहस्रनाम पारायण एवं ललितासहस्रनाम पारायण सहित दैनिक सत्संग, प्रत्येक रविवार को बालविकास कार्यक्रम, सोमवार को विशेष सत्संग एवं चिकित्सा शिविर, बुधवार को श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन, मास की ८ तारीख को नारायण सेवा तथा पूर्णिमा को सत्यनारायण पूजा इत्यादि गतिविधियाँ यथावत् चलती रहीं ।

विशाख ग्रामीण शाखा (आन्ध्र प्रदेश): दैनिक योग कक्षा, समीपवर्ती गाँवों में साप्ताहिक सत्संग तथा निःशुल्क चिकित्सा शिविर नियमित रूप से चलते रहे। ९ सितम्बर को मासिक सत्संग किया गया। ९ एवं २३ सितम्बर को नि:शुल्क दन्त चिकित्सा शिविर आयोजित किये गये।

घाटपदमुर शाखा, जगदलपुर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक प्रातःकालीन एवं सायंकालीन सत्संग, प्रत्येक गुरुवार को पादुका पूजा, शनिवार को श्री हनुमान चालीसा, सुन्दरकाण्ड पाठ तथा रविवार को श्री विष्णुसहस्रनाम पाठ इत्यादि कार्यक्रम यथावत् चलते रहे। २७ जुलाई को श्री गुरुपूर्णिमा १२ घण्टे 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र के अखण्ड जप तथा पादुका पूजा सहित मनायी गयी तथा चन्द्रग्रहण के अवसर पर रात्रि में ५ घण्टे 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड जप किया गया। शिवानन्द विद्यालय में १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस तथा २६ अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व उल्लासपूर्वक मनाये गये।

बीकानेर (राजस्थान): अगस्त-सितम्बर माह में नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त, शाखा द्वारा ५ अगस्त को सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि आराधना दिवस, २ सितम्बर को श्री कृष्ण जन्माष्टमी, ७ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का १० वाँ पुण्यतिथि आराधना दिवस, ८ सितम्बर को श्री गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती तथा २४ सितम्बर को परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की १०२ वीं जयन्ती श्रद्धापूर्वक मनाये गये।

राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान): शाखा द्वारा दैनिक पूजा, पारायण, हवन, सत्संग इत्यादि की आध्यात्मिक गतिविधियाँ तथा ज्ञान-प्रसार, स्वास्थ्य, अन्नदान एवं जल सेवा कार्यक्रम सभी पूर्ववत् नियमित रूप से चलते रहे। १३ अगस्त श्रावण माह के द्वितीय सोमवार को कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा पंचमुखी महादेव का रुद्राभिषेक सम्पन्न हुआ ।

जामनगर महिला शाखा (गुजरात): शाखा द्वारा महामृत्युञ्जय मंत्र जप एवं स्वाध्याय सहित सत्संग यथावत् चलते रहे।

बी. एच. ई. एल., हरिद्वार (उत्तराखण्ड): शाखा की नियमित गतिविधियाँ पूर्ववत् चलती रहीं। गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर २८-३० शाखा सदस्य मुख्यालय आश्रम में आयोजित भव्य पादुका पूजा में सम्मिलित हुए। ८ सितम्बर को सद्गुरुदेव की १३१ वीं जयन्ती पादुका पूजा एवं भजन-कीर्तन सहित मनायी गयी। इस अवसर पर चण्डीघाट पर स्थित चिदानन्द कुष्ठाश्रम के अन्तेवासियों के लिए भण्डारे का आयोजन किया गया।

♦ ♦ ♦

हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की नवीनतम सूची

श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कृत

अच्छी नींद कैसे सोयें	₹ ७०/-
अध्यात्मविद्या	१४०/-
कर्म और रोग	२०/-
कर्मयोग-साधना	१३०/-
गीता-प्रबोधिनी	५५/-
गुरु-तत्त्व	५५/-
घरेलू चिकित्सा	११०/-
जपयोग	५५/-
जीवन में सफलता के रहस्य	१८५/-
ज्योति, शक्ति और प्रज्ञा	४०/-
दिव्योपदेश	३५/-
देवी माहात्म्य	७५/-
धनवान् कैसे बनें	५०/-
धारणा और ध्यान	१७०/-
ध्यानयोग	१२०/-
प्राणायाम-साधना	६०/-
बालकों के लिए दिव्य जीवन सन्देश	९०/-
ब्रह्मचर्य-साधना	९०/-
भगवान् श्रीकृष्ण	१३०/-
मन : रहस्य और निग्रह	२०५/-
मरणोत्तर जीवन और पुनर्जन्म	१३५/-
मानसिक शक्ति	९०/-
मूर्तिपूजा का दर्शन और महत्त्व	३०/-
श्रीमद्भगवद्गीता	४२५/-
योगाभ्यास का मूलाधार	१८५/-
योगवासिष्ठ की कथाएँ	९०/-
योगासन	११५/-
विद्यार्थी-जीवन में सफलता	६०/-
शिवानन्द-आत्मकथा	₹ १००/-
सत्संग भजन माला	१५५/-
सत्संग और स्वाध्याय	६०/-
सन्त-चरित्र	२३५/-
सौ वर्ष कैसे जियें	९५/-
साधना	३२०/-
स्वरयोग	६०/-
हठयोग	१००/-
हिन्दूतत्त्व-विवेचन	१६०/-

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज कृत

अध्यात्म-प्रसून	३५/-
आलोक-पुंज	१०५/-
ज्योति-पथ की ओर	१०५/-
त्याग : शरणागति	२५/-
भगवान् का मातृरूप	७०/-
मोक्ष सम्भव है!	२५/-
योग-सन्दर्शिका	५५/-
शाश्वत सन्देश	५५/-
शोकातीत पथ	१४०/-
साधना सार	३५/-

अन्य लेखक कृत

एकादशोपनिषदः (मूल मन्त्राः)	१४०/-
गुरुदेव कुटीर में भजन-कीर्तन	४५/-
चिदानन्दम्	२००/-
जीवन-स्रोत	१५०/-
शारीरकमीमांसादर्शनम्	१५/-
श्रीमद्भगवद्गीता (मूलमात्रम्)	७५/-
सर्वस्नेही हृदय	१००/-

५०% अग्रिम। पैकिंग अतिरिक्त। विस्तृत जानकारी के लिए निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें :

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पत्रालय : शिवानन्दनगर—२४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

फोन : ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail : bookstore@sivanandaonline.org

For online orders and Catalogue : dlsbooks.org

INFORMATION ABOUT BOOKS

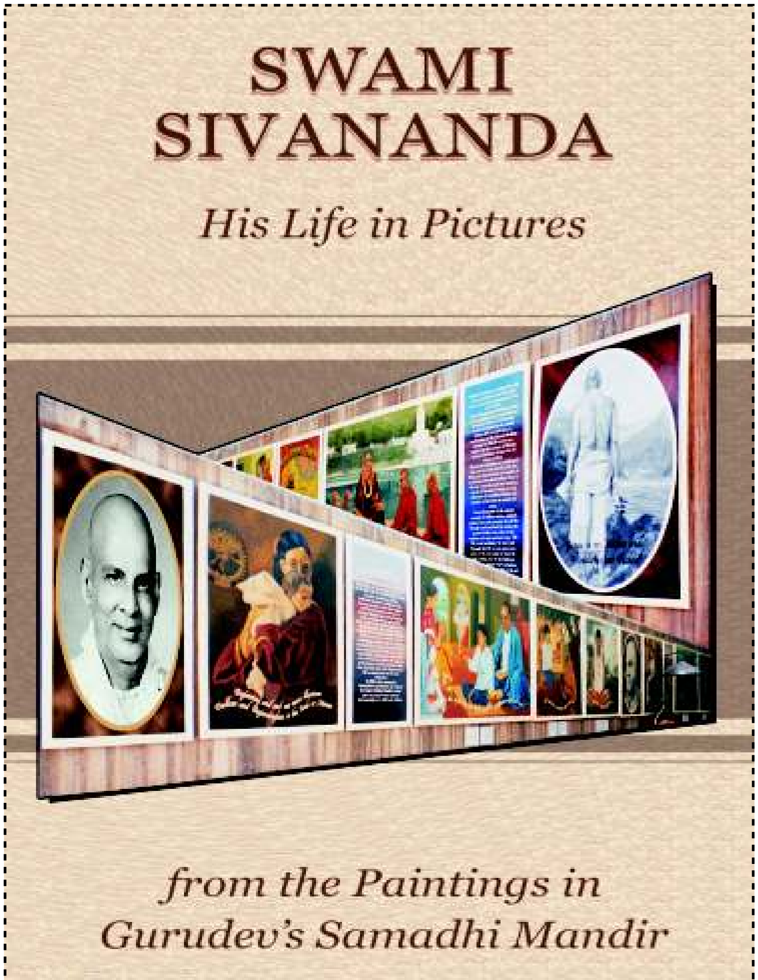

NEW RELEASE!

SWAMI SIVANANDA

HIS LIFE IN PICTURES

श्री गुरुदेव के पावन समाधि–मन्दिर की भित्तियों पर प्रदर्शित मनोहारी चित्रों से बनी एक सुन्दर चित्रमय पुस्तक

पृष्ठ : ७२ मूल्य : ₹ ७५/–

BOOKS NOW AVAILABLE

1.	Thought Power	Swami Sivananda	₹ 85/-
2.	Practice of Brahmacharya	Swami Sivananda	125/-
3.	Swami Sivananda's Divine Nectar	Swami Sivananda	230/-
4.	Inspiring Songs and Kirtans	Swami Sivananda	130/-
5.	Voice of the Himalayas	Swami Sivananda	185/-
6.	Narada Bhakti Sutras	Swami Sivananda	100/-
7.	देवी माहात्म्य	स्वामी शिवानन्द	115/-
8.	योगासन	स्वामी शिवानन्द	115/-
9.	मन : रहस्य और निग्रह	स्वामी शिवानन्द	205/-
10.	सत्संग और स्वाध्याय	स्वामी शिवानन्द	60/-
11.	सौ वर्ष कैसे जियें	स्वामी शिवानन्द	95/-
12.	सत्संग भजन माला	स्वामी शिवानन्द	155/-
13.	गुरु–तत्त्व	स्वामी शिवानन्द	55/-
14.	Hindu Gods and Goddesses	Swami Sivananda	100/-
15.	Stories from the Mahabharata	Swami Sivananda	180/-
16.	The Science of Pranayama	Swami Sivananda	70/-
17.	Stories From Yoga Vasishtha	Swami Sivananda	110/-
18.	Inspiring Stories	Swami Sivananda	170/-
19.	Fourteen Lessons on Raja Yoga	Swami Sivananda	55/-
20.	Concentration and Meditation	Swami Sivananda	225/-
21.	Bliss Divine	Swami Sivananda	415/-
22.	Health and Diet	Swami Sivananda	110/-
23.	A Guide to Noble Living	Swami Chidananda	55/-
24.	Lectures on Raja Yoga	Swami Chidananda	80/-
25.	The Glory of God	Swami Krishnananda	90/-
26.	Commentary on the Bhagavadgita	Swami Krishnananda	485/-
27.	Sivananda's Integral Yoga	Swami Venkatesananda	65/-

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

सूचना

युग्म प्लेटिनम जुबली महोत्सव का कार्यक्रम

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।। श्रीमद्भागवतम् १२–३–५२

सतयुग में जो ध्यान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, त्रेतायुग में तपश्चर्या द्वारा और द्वापरयुग में भगवान् श्री कृष्ण के चरणकमलों की पूजा से प्राप्त किया जा सकता है, वह कलियुग में केवल भगवन्नाम की महिमा का गान करने से ही प्राप्त हो जाता है।

३ दिसम्बर तथा ३१ दिसम्बर २०१८ क्रमशः भजन हॉल में आयोजित अखण्ड महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ प्रारम्भ होने तथा श्री विश्वनाथ भगवान् की विश्वनाथ मन्दिर में प्रतिष्ठा होने की प्लेटिनम जुबली के पावन अवसर हैं। इस पावन युग्म प्लेटिनम जुबली के शुभ अवसर के उपलक्ष्य में मुख्यालय आश्रम ने निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन करने का निश्चय किया है :–

२० सितम्बर से ३ दिसम्बर २०१८ तक	भजन हॉल में विभिन्न डी.एल.एस. शाखाओं द्वारा महामन्त्र कीर्तन
२८ नवम्बर से ३० नवम्बर २०१८ तक	आध्यात्मिक सम्मेलन
१ दिसम्बर २०१८	नौका संकीर्तन
३ दिसम्बर २०१८	महामन्त्र संकीर्तन सहित शोभा यात्रा
४ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक	श्री विश्वनाथ मन्दिर में पञ्चाक्षरी मन्त्र संकीर्तन
५ दिसम्बर से ९ दिसम्बर तक	ब्रह्मश्री नोच्चूर वेंकटरामन द्वारा प्रवचन
३१ दिसम्बर २०१८	श्री विश्वनाथ भगवान् का महापूजन
२० सितम्बर से ३१ दिसम्बर २०१८ तक	प्रतिदिन प्रभातफेरी

इन महिमामय अवसरों के उपलक्ष्य में आध्यात्मिक सम्मेलन के समय एक स्मारिका का विमोचन करने का भी विचार है।

इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए सभी भक्त आमन्त्रित हैं।

—द डिवाइन लाइफ सोसायटी

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

Registrar of Newspapers for India
No. 71610/99

Postal-Registration No. TRI/005/2018-20

नवम्बर २०१८

LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
(Licence No. WPP No. 02/18-20, Valid upto: 31-12-2020)
Posted at Shivanandanagar, Tehri-Garhwal, Uttarakhand
DATE OF POSTING : 20TH OF EVERY MONTH:
P.O. SHIVANANDANAGAR—249192

भारत माता का वैभव

महात्मा संसार के हर देश में जन्म लेते हैं; परन्तु विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में महात्माओं की संख्या अधिक है। यह भारत की विशेषता है। इसीलिए भारत को ऋषि-मुनियों का देश कहा जाता है।

भारत योगियों, ऋषियों, मुनियों और आत्मदर्शियों का देश है। भारत ने शंकर, रामानुज जैसे कई आचार्यों; कबीर, रामदास, तुकाराम, गौरांग महाप्रभु आदि जैसे कई सन्तों; ज्ञानदेव, गोरखनाथ जैसे कई योगियों और दत्तात्रेय, सदाशिव ब्रह्म जैसे कई मुनियों को जन्म दिया है। आज भी यहाँ बहुत से योगी और महात्मा रहते हैं।

चन्दन के वृक्ष सभी जंगलों में नहीं होते हैं। मोती सभी समुद्रों में नहीं मिलते हैं। स्वर्ण भूमि के हर किसी प्रदेश में नहीं रहता है। योगी भी दुनिया के हर स्थान में नहीं रहते हैं।

भारत धन्य है, जिसकी सुन्दर धरती पर योगी हैं, सन्त हैं, ऋषि हैं; जहाँ गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु और कावेरी नदियाँ प्रवाहित होती हैं तथा जहाँ विशालकाय हिमालय पर्वत है। वह भारतवर्ष धन्य है जिसका अतीत अत्यन्त वैभवशाली है, जहाँ की धरती पर राम, कृष्ण, व्यास, शंकर, दत्तात्रेय, पतंजलि आदि पवित्र पुरुषों के चरण पड़े हैं। आर्यावर्त धन्य है, जहाँ आज भी योगाभ्यास और तपस्या में लीन रहने वाले असंख्य ऋषि, मुनि और योगी रह रहे हैं। हे मातृभूमि ! तुम धन्य हो जहाँ देवता और जीवन्मुक्त निवास करते हैं, सुन्दर वनों और नैमिषारण्य, झूँसी, उत्तरकाशी, ऋषिकेश आदि एकान्त प्रदेशों से जो विभूषित है, जहाँ कुरुक्षेत्र जैसा पवित्र स्थान है जिसमें भगवान् कृष्ण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को गीता के अमर गीतों के द्वारा अपना स्फूर्तिदायी सन्देश सुनाया था। भगवान् आपकी सन्तान का भला करें और उसे सम्यक् ज्ञान, आत्मानुभूति, आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करें जिससे कि वह आपकी सेवा करे और आपकी कीर्ति-पताका को उन्नत करे !

—स्वामी शिवानन्द

सेवा में

'द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी' की ओर से स्वामी विमलानन्द द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से मुद्रित तथा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्य कार्यालय, पो. शिवानन्दनगर, जि. टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन २४९१९२' से प्रकाशित। फोन : ०१३५-२४३००४०, २४३११९०
E-mail: generalsecretary@sivanandaonline.org ; Website : www.sivanandaonline.org ; www.dlshq.org
सम्पादक : स्वामी निर्लिप्तानन्द